(मासिक)

ज्ञानामृत

वर्ष 55, अंक 5, नवम्बर, 2019
मूल्य 8.50 रुपये, वार्षिक शुल्क 100 रुपये

1.शान्तिवन (आबू रोड)- वैश्विक शिखर सम्मेलन का उद्‌घाटन करते हुए भारत के उप-राष्ट्रपति महामहिम भ्राता एम.वेंकैया नायडू, राजस्थान के राज्यपाल महामहिम भ्राता कलराज मिश्र, राजयोगिनी दादी जानकी जी, राजयोगिनी दादी रत्नमोहिनी जी, ब्र.कु.निर्वैर भाई, ब्र.कु.मृत्युंजय भाई, ब्र.कु.मुन्नी बहन, केन्द्रीय जल संसाधन मंत्री भ्राता अर्जुनराम मेघवाल तथा अन्य। **2.शान्तिवन (आबू रोड)-** वैश्विक शिखर सम्मेलन के समापन समारोह में केक काटते हुए लोकसभा अध्यक्ष भ्राता ओम बिरला, राजयोगिनी दादी जानकी जी, ब्र.कु.मृत्युंजय भाई, सांसद देवजी भाई पटेल, ब्र.कु.हंसा बहन तथा अन्य।

1.चेन्नई- 'वन गॉड वन वर्ल्ड फैमिली' कार्यक्रम के मंच पर उपस्थित हैं ब्र.कु.बीना बहन, ब्र.कु.रामनाथ भाई, मौलवी भ्राता के.एम.इलयास रीयाजी, स्वामी जी.जे.तपस्वी, तमिलनाडू के महामहिम राज्यपाल भ्राता बनवारी लाल पुरोहित, ब्र.कु.उषा बहन, फादर एस.थोमस एलांगो तथा ब्र.कु.कलावती बहन। **2.शिमला-** हिमाचल प्रदेश के राज्यपाल महामहिम भ्राता बंडारू दत्तात्रेय का राजभवन में अभिनन्दन करते हुए ब्र.कु.प्रकाश भाई। साथ में ब्र.कु.रेवादास भाई तथा ब्र.कु.धर्मपाल भाई। **3.भुवनेश्वर-** आस्ट्रेलिया से आये ब्र.कु.चार्ली भाई, उड़ीसा के महामहिम राज्यपाल भ्राता गणेशी लाल जी को ईश्वरीय सौगात देते हुए। साथ में ब्र.कु.लीना बहन एवं अन्य। **4.दिल्ली (लोधी रोड)-** 'दी आर्ट ऑफ सेल्फ इंजीनियरिंग' अभियान का उद्घाटन करने के बाद ब्र.कु.बृजमोहन भाई, भ्राता डी.एस.मिश्र, आई.ए.एस.; डॉ.वी.पी.जॉय, आई.ए.एस.; ब्र.कु.मोहन सिंघल भाई, ब्र.कु.मेहता भाई, ब्र.कु.गिरिजा बहन, ब्र.कु.पीयूष भाई तथा अन्य ईश्वरीय स्मृति में। **5.काठमाण्डू-** समाजसेवा प्रभाग के द्वारा आयोजित 'परमात्म शक्ति द्वारा स्वर्णिम युग की स्थापना' विषयक कार्यक्रम का उद्घाटन करते हुए नेपाल की केन्द्रीय मंत्री बहन पद्मा कुमारी, ब्र.कु.राज बहन, ब्र.कु.अमीरचंद भाई, ब्र.कु.प्रेम भाई तथा अन्य। **6.भोपाल (ईदगाह हिल्स)-** 'खुशी आपके द्वार पर' विषयक कार्यक्रम का उद्घाटन करते हुए ब्र.कु.शिवानी बहन, ब्र.कु.अवधेश बहन, ब्र.कु.नीता बहन, आई.ए.एस. भ्राता मनोज श्रीवास्तव, बिल्डकोन कंपनी के मालिक भ्राता दिलीप सूर्यवंशी तथा अन्य। **7.त्रिरुवनन्तपुरम-** राजभवन में केरल के राज्यपाल महामहिम भ्राता आरिफ मोहम्मद खान से ज्ञान-चर्चा करते हुए ब्र.कु.मिनी बहन। साथ में अन्य ब्र.कु.बहनें। **8.बीकानेर-** 'म्हारो राजस्थान-समृद्ध राजस्थान' अभियान की शोभायात्रा को हरी झण्डी दिखाकर रवाना करते हुए ऊर्जा व जन स्वास्थ्य अभियांत्रिकी मंत्री डॉ.बुलाकी दास कल्ला जी। साथ में हैं ब्र.कु.कमल बहन तथा अन्य।

गुणग्राहकता

सद्गुणों से ही मनुष्य देवता बनता है और उनको दबा देने से असुर। गुण-ग्राहक मनुष्य ही वास्तव में प्रभु-पसन्द, लोक-पसन्द और मन-पसन्द होता है। अत: मनुष्य को चाहिए कि जैसे हंस मोती चुगता है अथवा क्षीर ले लेता है और नीर छोड़ देता है, वैसे ही वह भी सद्गुण ग्रहण कर ले और अवगुणों को त्याग दे।

देखो तो सुन्दर-सुन्दर फूल सुगन्ध बिखेरते हैं; वह सुगन्ध उनमें पैदा कहाँ से होती है? उन्हें जो खाद दी जाती है वह तो बहुत ही दुर्गन्धपूर्ण होती है और कालिमा, कुरूपता तथा कठोरता को लिए होती है। परन्तु पुष्प उसमें से भी किसी प्रकार कोमलता, रंग, सौन्दर्य और सुगन्ध लेकर ऐसा तो खिल जाता है कि उसे देखने वाले के मुख पर मुस्कान, नेत्रों में ताजगी और मन में हर्ष व आनन्द भर जाता है!

संसार में मनुष्य के सामने भी अनेक प्रकार की परिस्थितियाँ आती हैं और उसका सम्पर्क भी विभिन्न प्रकार के लोगों से होता है। यदि वह उन परिस्थितियों में भी गुण-ग्राहकता का दृष्टिकोण बना ले और हरेक मनुष्य में जो गुण हैं, उन ही को देखे तो एक-एक व्यक्ति से, एक-एक गुण लेते हुए भी वह सर्वगुण सम्पन्न बन सकता है।

सचमुच, मनुष्य की दृष्टि और वृत्ति पर बहुत-कुछ निर्भर करता है। उदाहरण के तौर पर मान लीजिये कि एक व्यक्ति अपने दो मित्रों को स्नेह-भरे स्वर में भोजन के लिए आमंत्रित करते हुए कहता है कि 'भाई, कभी हमारे गरीबखाने में भी पधारें। काफी समय से हम लोग मिले भी नहीं हैं। कुछ हँसेंगे, बहलेंगे और बातचीत भी करेंगे।' दोनों मित्र निमन्त्रण स्वीकार कर नियत समय पर उसके यहाँ भोजन करने जाते हैं और वह मेजबान, बिना किसी तक्कलुफ के, परन्तु प्रेम और सादगी से बनाया गया भोजन उनके आतिथ्य में पेश करता है। वापस लौटते हुए उनमें से एक व्यक्ति दूसरे से कहता है, 'इसने तो हमें निमन्त्रण देकर सादा-सा खाना ही खिलाया है। मैं दोबारा तो कभी भी इसका निमन्त्रण स्वीकार करके अपना समय नष्ट नहीं करूँगा।' दूसरा उसे उत्तर में कहता है, 'अरे भाई, यह क्या कह दिया? जहाँ अपनापन होता है वहाँ तक्कलुफ थोड़े ही होती है। उसने तो हमें अपने घर का ही समझ कर जैसा हो सका वैसा खिलाया है। तुम यह नहीं देखते कि उसमें कितना स्नेह था? अरे भाई! खाने का निमन्त्रण तो एक बहाना ही था। वास्तव में भाव तो यह था कि दिल खोल कर बातें करेंगे।' देखिये तो एक गुणग्राहक व्यक्ति हर्षित हो रहा है और दूसरा अवगुण उठा कर जल-भुन रहा है।

सद्गुणों का सागर तो एक ज्योतिस्वरूप परमपिता परमात्मा ही है। आवश्यकता इस बात की है कि हम उसकी दी हुई शिक्षा को धारण करें। ●●●

अमृत-सूची

- संजय की कलम से 3
- झूठ और सत्य (सम्पादकीय) 4
- सच्चे सुख की खोज 7
- प्रश्न हमारे, उत्तर दादी जी के 8
- पत्र सम्पादक के नाम 10
- वैश्विक शिखर सम्मेलन समाचार 11
- वारिस कौन ? 17
- असंक्रामक रोग और राजयोग 20
- हर राह ईश्वर तक नहीं पहुँचती 22
- शराब लगाये गुहार (कविता) 23
- नारी नर्क का द्वार नहीं, काम विकार नर्क का द्वार है 24
- नारी की महिमा बड़ी है (कविता) 26
- सब चिन्ताएँ समाप्त हो गईं (अनुभव) 27
- स्वयं परमात्मा ने कैंसर को क्योर किया 28
- सचित्र सेवा-समाचार 29
- सुप्रीम सर्जन ने किया सफल आपरेशन 30
- जीवन बना निर्व्यसनी और खुशहाल 31
- सचित्र सेवा-समाचार 32
- गीत की एक लाइन बनी संजीवनी 34

सम्पादकीय

झूठ और सत्य

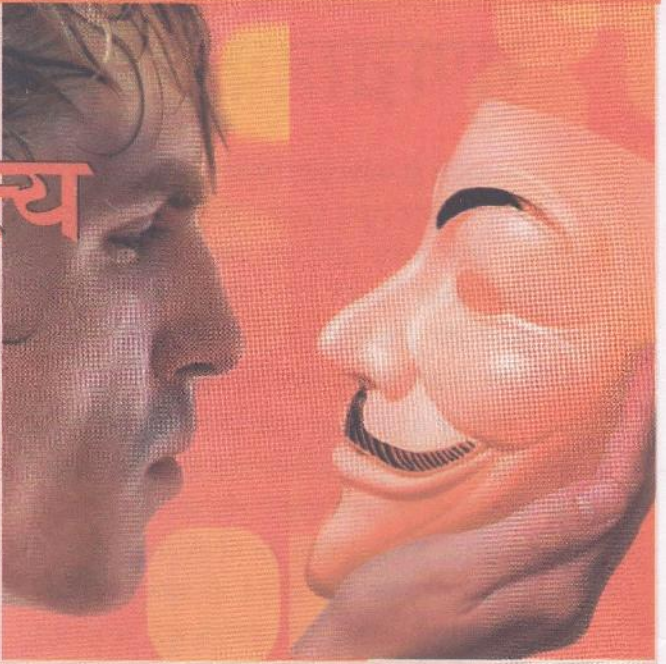

सार्वजनिक जीवन में अनेक लोगों से सम्पर्क में आते प्रतिदिन हम देखते और सुनते हैं कि लोग छोटी-से-छोटी और बड़ी-से-बड़ी बातों में अक्सर झूठ बोल देते हैं। दफ्तरों में काम करने वाले कितने ही लोग यह कहते हुए सुने जाते हैं कि वे प्रायः झूठा कारण बताकर ही छुट्टी लेते हैं वरना उनके लिए छुट्टी मिलना मुश्किल हो जाता है। व्यापारी वर्ग बड़े तपाक से कहता है कि 'बाबूजी, आज सच बोलने से इतना कहाँ कमा सकते हैं कि घर का खर्च भी चला सकें और बच्चों की पढ़ाई-लिखाई और ब्याह-शादी का भी प्रबन्ध कर सकें?' यह सबको मालूम है कि इन्कम टैक्स के बोझ से बचने के लिए वे झूठा हिसाब बड़ी सफाई से बनाते हैं, धड़ल्ले से दिखाते हैं। डॉक्टर लोग रोगी के रोग का निदान न भी कर सकें तो भी यही कहते हैं कि यह दवाई खा लो तो ठीक हो जाओगे। पुलिस वाले दूसरों के बारे में यही कहते हैं कि अगर उनकी दो सौ रुपये की चोरी हो जाए तो वे दो हजार से कम की रिपोर्ट नहीं लिखवाते। इसकी वजह यह है कि रिपोर्ट लिखवाने वाला सोचता है, लोग ये न सोच लें कि उसके घर में कोई कीमती सामान ही नहीं है। स्वयं पुलिस वाले कितना सच बोलते हैं, इसके लिए कुछ न कहें तो भी ठीक नहीं और कहें तो भी ठीक नहीं। फिर छोटे बच्चों के लिए तो मशहूर ही है कि वे ऐसी मासूमियत से झूठ बोलते हैं कि जल्दी ही उनका झूठ पकड़ा भी जाता है।

क्या झूठ के बिना काम नहीं चलता?

जमाना ऐसा आ गया है कि लोग खुल्लम-खुल्ला कहने लगे हैं कि 'बाबूजी, आज झूठ के बिना भला काम कहाँ चलता है? यदि वकील लोग सच बोलें तो उनकी वकालत ही ठप्प हो जाए। यदि राजनीतिज्ञ चुनाव में अपने तथा अपने प्रतिपक्षी के बारे में सच बतायें तो न वे चुनाव जीत सकेंगे और न मन्त्री बन सकेंगे। यदि अपनी कम्पनी के माल की बिक्री की बढ़ोतरी के व्यवसाय में लगा हुआ व्यक्ति किसी ग्राहक को सच-सच बता दे कि उसकी कम्पनी के माल में फलाँ-फलाँ नुक्स होता है और दूसरी कम्पनी के माल में अमुक-अमुक अच्छाई होती है तो उसका माल भला लेगा ही कौन? इसी प्रकार, यदि वकील यह साफ-साफ बता दे कि जिस पक्ष से वह मुकदमा लड़ रहा है वह वास्तव में जुर्मवार है अथवा कि उसके पक्ष में फलाँ-फलाँ कानूनी कमजोरी है तो वह मुकदमा जीतेगा ही कैसे और उसको भविष्य में कौन अपना वकील नियुक्त करके फीस देना पसन्द करेगा।' अतः हर व्यक्ति अपने दही को मीठा बताता है, चाहे वह खट्टा हो। कहने का भाव यह है कि हर व्यक्ति अपने झूठ बोलने के बारे में सफाई पेश करता है और झूठ का धन्धा इतना चल निकला है कि लोग न्यायालयों में शपथ लेकर जो बयान देते हैं, उसमें स्पष्ट कहते हैं कि 'मैं जो कुछ

कहूँगा बिल्कुल सच कहूँगा' अथवा कि 'जहाँ तक मुझे ज्ञान है और मेरा विश्वास है, मैं सच कह रहा हूँ' परन्तु प्रायः लोग मन में जानते हैं कि वास्तविकता इसके विपरीत ही होती है। इस युग की ऐसी दशा देखकर ठीक ही कहा गया है कि कलियुग में झूठ ही का बोलबाला होता है। वास्तव में इसी युग के बारे में ही कहा गया है, 'झूठी काया, झूठी माया, झूठा सब संसार' अथवा कि यहाँ झूठ ही झूठ है, सत्य की रत्ती भी नहीं।

व्यवहार और परमार्थ में झूठ

दार्शनिक दृष्टि से देखा जाये तो आज केवल पारस्परिक व्यवहार में ही झूठ का सिक्का नहीं चल रहा बल्कि परमार्थ के मार्ग में भी सोने के नाम से मुलम्मा मिल रहा है। आज संसार में पारमार्थिक सत्ता (आत्मा, परमात्मा, परलोक इत्यादि) के बारे में इतने मत-वाद हैं कि गणना करना भी मुश्किल है और उनमें से हरेक बाकी सबको झूठ बता रहा है। वास्तव में सभी सत्य हो भी तो नहीं सकते। हालत यह है कि जो व्यक्ति भगवान की सत्ता को ही नहीं मानता, आज उसे भी भगवान कहा जा रहा है। जो व्यक्ति अवतारवाद का निषेध करता है, स्वयं उस व्यक्ति को 'अवतार' घोषित किया जा रहा है। हमारे इस कथन के समर्थन के लिए भारत का धार्मिक इतिहास साक्षी है क्योंकि यद्यपि गौतम बुद्ध ने न भगवान के अस्तित्व को आवश्यक माना, न अवतारवाद को स्वीकार किया लेकिन लोग 'बुद्धं शरणं गच्छामि' का मन्त्र पढ़ते हैं और धार्मिक साहित्य में विष्णु के अवतारों में बुद्ध की भी अवतार के रूप में परिगणना की जाती है। इसके अतिरिक्त जो व्यक्ति भगवान को स्वयं से भिन्न एक सर्वोपरि सत्ता मानता है, उसे भी जनता 'भगवान' शब्द से सम्मानित कर रही है। उदाहरण के तौर पर व्यास ऋषि ने गीता के वक्ता को 'भगवान' मानते हुए गीता के प्रारम्भ में 'भगवानुवाच' लिखा है लेकिन आज अनेक पंडित, पुजारी, कथावाचक और भक्त व्यास के बारे में ही कहते हैं कि गीता 'भगवान व्यास' ने लिखी। और बात देखिए, आज लोग भगवान के नाम पर ही कसम खाकर कहते हैं कि 'मैं भगवान को हाजिर और नाजिर मानकर कहता हूँ' जबकि वास्तव में उनमें से प्रायः किसी ने भी यह नहीं देखा कि भगवान सब जगह हाजिर और नाजिर है, न ही वे अपने जीवन में भगवान को सदा हाजिर-नाजिर मानकर सत्य आचरण ही करते हैं। इस पर भी विशेष बात यह है कि वे लोग दूसरी ओर यह भी कहते हैं कि 'आत्मा ही परमात्मा है' जिसका भाव यही होता है कि उनसे भिन्न कोई नाजिर परमात्मा नहीं है। तब भला हाजिर-नाजिर मानने का क्या अर्थ हुआ? आश्चर्य है कि एक ओर वे कहते हैं कि आज सब जगह भ्रष्टाचार, पापाचार, अत्याचार, विकार, चोर बाजार और धोखाबाजी है, दूसरी ओर वे ही लोग कहते हैं कि सब जगह भगवान विराजमान है और उनके हुक्म के बिना पत्ता भी नहीं हिलता। अप्रत्यक्ष रूप में इसका भाव तो यही निकलता है कि सब जगह हाजिर परमात्मा ही की इच्छा से, सब जगह भ्रष्टाचार है परन्तु ऐसे तो शायद वे स्वयं भी मानने को तैयार नहीं होंगे, जिसका भाव यह हुआ कि वे पारमार्थिक सत्य को भी नहीं जानते।

आज झूठ सर्वव्यापक है परन्तु लोग कहते हैं कि सत्य स्वरूप परमात्मा सर्वव्यापक है। वे इतना भी नहीं सोचते कि जब हम परमात्मा को सत्य कहते हैं तो इस कथन से ही बाकी सब झूठ ठहरते हैं।

अतः झूठ और सत्य की चर्चा में सबसे ज्यादा खेद की बात तो यही है कि आज सत्य स्वरूप परमात्मा के बारे में भी झूठ प्रचलित है और सतयुग के देवताओं पर भी झूठे कलंक लगाये जाते हैं। फिर इस झूठ को सत्य सिद्ध करने के लिए बड़े-बड़े तर्क प्रस्तुत करते हैं और सुनने वाले कहते हैं कि उनकी इस बात में बड़ा वजन है। हाँ, आइनस्टाइन के सापेक्षवाद के अनुसार तो ऊर्जा का भी वजन है तब झूठी बात का भी वजन तो होगा क्योंकि ध्वनि भी ऊर्जा का रूप है।

अब किया क्या जाये?

अब प्रश्न उठता है कि आज के वातावरण में सत्य बोलने की इच्छा वाला मनुष्य क्या करे? जब उसके आस-पास, चहुँ ओर, दफ्तर में, व्यापार में, बाजार में, झूठ ही पनप रहा है तो ऐसी स्थिति में एक धर्म-प्रेमी व्यक्ति, योग रूपी अनुशासन के अन्तर्गत जिसका यम-नियमों में महत्वपूर्ण स्थान है, उस सत्य का पालन कैसे करे?

आज व्यवहारिक रूप में लोग देखते हैं कि कई परिस्थितियों में सत्य बोलने का जो परिणाम उनके सामने आता है वह सुनने वाले और बोलने वाले, दोनों के लिए दुखद होता है। उदाहरण के तौर पर मान लीजिए कि एक व्यक्ति किसी से पूछता है, 'बताइये भाई साहब, मेरे बारे में आपका क्या विचार है?' अब यदि वह उसे स्पष्ट शब्दों में कह दे कि वह उस व्यक्ति को ठीक नहीं समझता और कि उसके फलाँ-फलाँ कारण हैं तो बात बिगड़ेगी ही। यदि प्रश्न-कर्त्ता भी दूसरे के बारे में ऐसा ही कुछ कह दे तो दोनों के सम्बन्ध में तनाव ही पैदा होगा। ऐसी परिस्थिति में हम सत्य को महत्व दें या सम्बन्ध, पारस्परिक स्नेह और शान्ति को? इसी प्रकार, मान लीजिए कि कोई व्यक्ति किसी दूसरे को अपने यहाँ किसी अवसर पर पधारने का निमंत्रण देता है परन्तु वह आमन्त्रित व्यक्ति प्रथम के पास जाना नहीं चाहता क्योंकि वह उसे ठीक ही नहीं मानता; तब क्या वह उसे सच-सच बता दे कि वह उस व्यक्ति को अच्छा नहीं समझता या यह झूठ कह दे कि उस दिन किसी और जगह जाने के लिए पहले से उसके पास निश्चित कार्यक्रम है।

ऐसी परिस्थिति में मनुष्य भद्रता और शिष्टता को महत्व दे या सीधे शब्दों में सच कह दे कि वह आमन्त्रणकारी व्यक्ति या संस्था के साथ कोई संबंध नहीं रखना चाहता। इसी प्रकार यदि कोई रोगी किसी डॉक्टर से पूछता है कि 'डॉक्टर साहब, मैं इस रोग से कब छूटूँगा? डॉक्टर जी, मैं बचूँगा भी या नहीं?' अब यह जानते हुए भी कि रोग बड़ा क्रूर और दुस्साध्य है, डॉक्टर उसे ढांढ़स बंधाने के लिए कह देता है कि 'बस अब जो दवाई दे रहा हूँ, इससे आप ठीक होना शुरू हो जाएँगे और निश्चय रखिए, आपका रोग कोई इतना विकट नहीं है, जितना आप समझ रहे हैं। इससे ज्यादा उग्र रोग से पीड़ित लोगों को भी मैंने कई बार ठीक किया है।' प्रश्न उठता है कि ऐसी परिस्थिति में जबकि रोगी के जीवन और मृत्यु की समस्या है तब सत्य ज्यादा महत्वपूर्ण है या रोगी को अधिक स्वास्थ्य लाभ हो सकता हो तो झूठ बोल दिया जाये?

ऐसे कितने ही उदाहरण ओर दिये जा सकते हैं। मनोवैज्ञानिक और शिक्षा शास्त्री कहते हैं कि जब एक निकम्मे और मन्द बुद्धि विद्यार्थी को समय-समय पर यह कहा जाता है कि 'तुममें बहुत विशेषताएँ और योग्यताएँ हैं और यदि तुम थोड़ा-सा पुरुषार्थ करो तो बहुत-से विद्यार्थियों से आगे निकल सकते हो', तो वह मन्द-बुद्धि विद्यार्थी भी कुछ-न-कुछ तो उन्नति करता ही है।

अधिक उदाहरणों को छोड़कर अब हम इस प्रश्न को लेते हैं कि क्या ऐसी-ऐसी परिस्थितियों में झूठ बोलना ठीक है? इसके बारे में आपको प्राय: दो विचारों के लोग मिलेंगे। कई तो यह कहेंगे कि झूठ किसी भी हालत में नहीं बोलना चाहिए चाहे उससे दंगा और फसाद भी हो जाए और हजारों लोगों का खून भी बह निकले। दूसरे लोग यह कहेंगे कि सत्य बोलना निस्संदेह अच्छा है परन्तु हमें यह भी देख लेना चाहिए कि किसी परिस्थिति में सत्य कहने से कहीं अनर्थ, हिंसा, घृणा इत्यादि दोषों को बढ़ावा तो नहीं मिलेगा? उनका कहना यह है कि अगर डॉक्टर के यह बोलने से रोगी का जीवन बच सकता है तो डॉक्टर के झूठ बोलने में कोई हर्ज नहीं।

प्रश्न तो यह है कि हम यह कैसे जानें कि हमें इस अवसर पर सच कहना चाहिए या झूठ? कुछ लोग इसका एक उत्तर यह दे सकते हैं कि हमें गलत तरीके से धन कमाने के लिए, व्यक्तिगत सांसारिक लाभ के लिए तो झूठ नहीं बोलना चाहिए परन्तु दूसरों के प्रति कल्याण भावना रखते हुए उनके साथ शिष्टता, मधुरता और नीतियुक्त वचन बोलने चाहिएँ। दूसरों का विचार इससे थोड़ा भिन्न, रूखापन और कट्टरवादिता को लिए हुए भी हो सकता है। इसके बारे में किसी का विचार कुछ भी हो,

मेरा मन्तव्य यह है कि दोनों हालतों में हमें शुरुआत पारमार्थिक सत्य से करनी चाहिए। इस दृष्टिकोण से अपने आप को शरीर मानना सबसे पहला झूठ है। सत्य तो यह है कि इस शरीर में विराजमान हरेक प्राणी एक चेतन आत्मा है और उसी सत्य के स्वरूप में स्थित होना सत्य की ओर स्थाई प्रगति है। इसी तरह सत्य स्वरूप परमात्मा को और परलोक को यथार्थ रूप से जानकर उनके अनुसार आचरण करना ही सत्य के पथ पर चलना है। इस प्रकार के अभ्यास से व्यवहारिक सत्य मनुष्य के जीवन में स्वत: ही आने लगता है। इससे मनुष्य की वृत्ति कल्याणकारी हो जाती है और सत्य स्वरूप परमात्मा से योग-युक्त होकर वह सहज बुद्धि से ठीक निर्णय कर सकता है कि किस अवसर पर दूसरों के कल्याण के लिए क्या कहना चाहिए। ●●●

सच्चे सुख की खोज

●●● रामायण प्रसाद, रीवा (म.प्र.)

आज मनुष्य भाग-दौड़ करके ज्यादा से ज्यादा धन इकट्ठा करना चाहता है, सेठ बनना चाहता है। प्राय: देखने में आता है, कुछ लोग धन्ना सेठ बन भी जाते हैं। धन को किसी कथा, पुराण, भागवत, मठ-मन्दिर निर्माण, हवन, भण्डारा आदि में खर्च करते हैं तथा सोचते हैं कि हमने बहुत बड़ा कार्य कर जीवन को सुखी बना लिया, अब हमें सद्गति प्राप्ति होगी और हमारे सभी विकर्मों की समाप्ति हो जाएगी। लेकिन, भविष्य की बात एक ओर रख दीजिए, ये लोग वर्तमान में ही सुख-शान्ति का अनुभव नहीं कर पा रहे हैं। योगी-ध्यानी भी ईश्वर को प्राप्त करने के अनेकों उपाय ढूँढ़ रहे हैं पर अभी तक सुख की प्राप्ति नहीं हुई है। प्राय: साधारण लोग भी कष्टों के निवारण के लिए मठ, मन्दिर, मस्जिद, गिरिजा घर, गुरुद्वारा तथा देवी-देवताओं के पास मन्नत मांगते फिरते हैं, चढ़ावा भी चढ़ाते हैं परन्तु शान्ति और सुख फिर भी अनुभव नहीं कर रहे हैं। हर समय परेशान ही नजर आते हैं। चेहरे पर चिड़चिड़ापन, क्रोध, घबराहट, प्रतिशोध, अहंकार और मुख पर रहस्यमय मुसकराहट छिपी रहती है। दिल दलदल में फँसा नजर आता है। सुख खोजने के लिए कभी-कभी दूसरी आत्माओं को कष्ट भी दे रहे हैं। खान-पान के माध्यम से भी सुख खोज रहे हैं। अच्छे-अच्छे पकवान खा रहे हैं, खिला रहे हैं। इससे चन्द समय के लिये जीभ-सुख मिलता है परन्तु कुछ समय बाद फिर वही पुरानी दशा। आखिर सुख प्राप्त कब होगा? सारी भौतिक सुख-सुविधायें प्राप्त हो गईं, परन्तु मन फिर भी अशान्त और दुखी है। थोड़ी-सी सुख की अनुभूति हो सकती है लेकिन चिर सुख कहाँ प्राप्त होगा?

मोहजीत होकर रहें

चिर सुख तब प्राप्त हो सकता है जब हम सभी विकारों को छोड़कर, सच्चा स्नेह और सौहार्द अपनाकर, वफादारी द्वारा विश्वासपात्रता अपनायें। कार्यालय हो या रसोई घर या समाज, हर जगह परस्पर मधुर संबंधों को स्थापित करें। स्वार्थपरायणता से दूर ईश्वरीय शक्ति द्वारा सुसंगठित एवं व्यवस्थित परिवार का निर्माण करें। इन सबके लिये दिव्य ज्ञान की आवश्यकता है। दिव्य ज्ञान द्वारा मनुष्य विकार छोड़ देता है और सद्गुणी बन जाता है। लोग कहते हैं कि गृहस्थ में रहकर यह संभव नहीं है पर हम देखते हैं कि अस्पताल में नर्स, डॉक्टर, कर्मचारी आदि सब अपना कर्तव्य मानकर मरीजों की सेवा करते हैं पर उनमें मोहित नहीं होते। ठीक इसी तरह, हम अपने मित्रों, परिवार, समाज और देश की सेवा, परमपिता परमात्मा का आदेश मानकर करें परन्तु सुख, दुख में आसक्त न हों अर्थात् मोहित न हों, मोहजीत होकर रहें। हम सब आत्मायें परमपिता की संतान हैं, शरीर का मोह छोड़कर, आत्मा से मोह लगायें और परमपिता शिव बिन्दु का ध्यान करते हुए, उसमें समाये रहें। इस प्रकार से ध्यान करने से सच्चा सुख मिलता है। यही राजयोग है। ●●●

नफरत करने वालों को जितने गहरे मन से महसूस करते हैं, प्यार करने वालों को भी वैसे ही महसूस कीजिए

प्रश्न हमारे, उत्तर दादी जी के

प्रश्न- क्या समझकर चलें तो अवस्था अच्छी हो जाती है?

उत्तर- मेरी अच्छी अवस्था तब हुई है जब मैं यह समझके चलती हूँ कि ये पाँच अंगुली हैं, इनमें कोई छोटी है, कोई मोटी है, बराबर नहीं हैं फिर भी इज़ी हैं। नो प्रॉब्लम क्योंकि पास्ट इज़ पास्ट करके सबको मिलाके चलते हैं। कोई छोटी बुद्धि वाले, कोई अच्छी बुद्धि वाले, कोई मोटी बुद्धि वाले हैं परन्तु फिर भी सब बाबा के बच्चे हैं। सब मिल करके बाबा के घर में, बाबा की याद में बैठते हैं तो सब ठीक रहता है, सब अच्छा लगता है।

बाबा ने इस ज्ञान मार्ग को बहुत सहज मार्ग बना दिया है। एक मिनट के लिए सब अपने आपको देखो कि मैं ज्ञानमार्ग के रास्ते में आ गयी हूँ तो भाग्यवान हूँ। भले लौकिक में रहते हैं लेकिन हम सब खुशनसीब हैं जो बाबा के करीब हैं क्योंकि यहाँ इस पढ़ाई में कमाई है, पढ़ाई के बाद कमाई नहीं है। पढ़ाई इतनी इन्ट्रेस्टेड है।

लौकिक भाई का फ्लैट वरली में था, उसका नाम मोहन था। बाबा उसको प्यार करता था। मैं सोचती थी, बाबा इसको क्यों प्यार करता है, ऐसा इसमें क्या है! उस समय बाबा ने कहा था, यह स्पेशल मेरा प्यारा बच्चा है। बाबा को प्यारा कौन लगता है? वरली में मैं जब सागर किनारे पैदल करती थी तो अच्छा लगता था। वहाँ पर कभी बैंच पर बैठ जाती थी तो कई बुजुर्ग भी वहाँ पैदल करते थे। मैं अकेली ही सफेद कपड़ों में दिखाई पड़ती थी। कोई आके मेरे बाजू में बैठ जाते थे। फिर पूछते थे, तुम कौन हो? कहाँ से आती हो? मैं कहती थी, मेरा नज़दीक में यहाँ घर है। फिर अच्छी सेवा हो जाती थी। कइयों का मन अभी तक थोड़ा मोह में फंसा हुआ है। काम, क्रोध नहीं हैं, थोड़ा लोभ, थोड़ा मोह है। अहंकार नहीं है क्योंकि अहंकार को सभी ने मार डाला है ना। तो जिसको सच्ची बातें सुननी हों वो भगवान के मुख से बातें सुनो, तो राज़ी-खुशी रहेंगे क्योंकि बाबा की बातें एक्यूरेट होती हैं।

शिव के साथ हमारी भी पूजा हो रही है ना, अभी हम देखते हैं। हम पूज्य भी बनते हैं तो हम ही पुजारी भी बनते हैं। मन्दिर भी हमने ही बनाये हैं। मुरली सुनने के लिए अभी इतने बड़े-बड़े हॉल भी बनाये हैं। बाबा ने ज्ञान का तीसरा नेत्र देके सबको त्रिनेत्री, त्रिकालदर्शी, त्रिलोकीनाथ बना दिया है। चक्र, त्रिमूर्ति और झाड़ के चित्र को देख बुद्धि में यह आता है कि साक्षी हो करके, बाबा को साथी बनाए इस बेहद वैराइटी ड्रामा में पार्ट बजाना है क्योंकि वैराइटी पार्टधारी हैं इसलिए सब बराबर नहीं हैं, नम्बरवार हैं।

प्रश्न- बाबा परमधाम में अपने बच्चों को पहचानेगा क्या?

उत्तर- बाबा परमधाम में रहता है और मैं कहाँ रहती हूँ, जहाँ मेरा बाबा रहता है। मैं बाबा को कहती हूँ, बाबा, आप मेरे बिगर निर्वाणधाम में क्या करेंगे? बाबा का कहना मानने वाला, लाइट रहने वाला, माइट खींचने वाला जरूर बाबा को पहचानेगा और बाबा भी ऐसी आत्मा को पहचानेगा। बाबा भले परदेश निर्वाणधाम, परमधाम में रहता है, हम वहाँ पहुँच जायेंगे। कोई-कोई अच्छी बहनें, अच्छे भाई हैं, अपनी सीट छोड़ते नहीं हैं। समझते हैं, बाबा ने सीट पर सेट होने का वरदान दिया है कि बच्चे, सीट पर सेट रहो। भले सीट पर सेट रहो पर जरा भी देह-अभिमान न आये, तो देही-अभिमानी स्थिति आपे ही बन जाती है। पहले सीट पर बैठते हैं, फिर ताज पहनाते हैं, वह भी सच्चा, झूठा नहीं। फिर तिलक लगाते हैं यहाँ भृकुटि में। इशारों से बताना मेरा काम है और आपका काम है मेरी भावनाओं को समझना। चलाने वाला चला रहा है। मैंने कभी बाबा को 'ना जी' नहीं कहा होगा तभी तो मैं मनमत, परमत के प्रभाव में नहीं आती हूँ। सदा ही सत्गुरु की श्रीमत पर चल रही हूँ।

सदा ही खुश रहना, यह भाग्यवान का काम है। जैसे ब्रह्मा बाबा कहता है, शिवबाबा मेरे साथ है, शिवबाबा भी कहता है, इसके बिना मैं कुछ नहीं कर सकता। तो ऐसे लाइट के साथ लाइट रहो और लाइट को देखो तो माइट मिल जाती है। फिर एवरीथिंग राइट हो जाता है। बाबा जो कहता है, 'जी बाबा' करती हूँ तो बाबा मेरी लाज रखता है। लाइट रहने की ऐसी पढ़ाई बाबा ने पढ़ाई है। न सिर्फ पढ़ाया है बल्कि पालना भी बहुत अच्छी दी है। पालना से प्राप्ति बहुत हुई है। मैं तो यही कहूँगी कि बाबा तेरा बनने में सुख इलाही मिला है।

प्रश्न- सबको अपना समझें लेकिन डिटैच रहें, लव रखें लेकिन फँसें नहीं, इसके लिए क्या करें?

उत्तर- हिम्मत बच्चे की है, मदद बाप की है। नियत साफ है तो जो संकल्प करते हैं वो हो जाता है। ड्रामा बहुत अच्छा है क्योंकि ड्रामा अनुसार जो बाबा कराता है वो हम करते जा रहे हैं। ड्रामा कहता है, यह नूँध है तो तुम चलती चल, करती चल, आगे बढ़ती चल। सिर्फ मैं और मेरा शब्द सम्भल के बोलो। परमपिता परमात्मा मेरा है, ऐसा और कोई कह नहीं सकता है सिवाए हम बाबा के बच्चों के। सारी दुनिया का चक्र लगाके देखो, कोई की ताकत नहीं है जो कहे, परमात्मा मेरा है। हम मेरा कहते हैं तो डिटैच रहते हैं, अटैच नहीं रहते हैं। लव है लेकिन लव में फंस नहीं जाते हैं। लव है लेकिन नेचर में नष्टोमोहा नेचर है। ममता भी नहीं है कि यह मेरा है। मेरा वही बाबा है जो ऊपर रहता है इसलिए सामने में बाबा को देखो। सतयुग में आने के लिए क्या पुरुषार्थ है और परमधाम में जाने के लिए क्या पुरुषार्थ है? परमधाम में जाने और सतयुग में आने की दोनों तैयारी अभी करनी हैं। बाबा को परमधाम में याद करो। राइट क्या है, रांग क्या है, अब यह सोचने की बात नहीं है, सब एक्यूरेट है।

प्रश्न- दादी जी, आपकी हरेक के प्रति क्या भावना रहती है?

उत्तर- आत्म-अभिमानी स्थिति ऐसी हो, जो देखे, उसे बाबा दिखाई पड़े। जो मुझको देखते हैं, मैं उनको नहीं देखती हूँ। मेरी यह भावना है कि ये बाबा को देखें। बाबा बहुत अच्छा है। जितना याद करते हैं उतना जागती ज्योत बनते हैं। यह अपना है, यह पराया है, ऐसे भी नहीं, संगमयुग में हरेक को अपना समझना है। हम राजयोगी हैं, कर्मयोगी हैं तो हमारा टाइम बहुत वैल्युबुल है। हर श्वास, संकल्प में बाबा तेरा बनने में सुख बहुत मिलता है। दुःख का नाम-निशान नहीं है। सुख होने से मैं औरों को सुख ही दूंगी ना। जिसके पास जो है वही तो देगा ना। मेरा बाबा शिक्षक भी है तो रक्षक भी है। बाबा की शिक्षाओं से सुख महसूस हो रहा है। मेरी हर एक के प्रति यही भावना रहती है कि ये सबको सुख दें, सुख लें। सुख देंगे तो रिटर्न में सुख ही मिलेगा। अभी यह बताओ कि सबके दुःख दूर हो गये हैं ना! दूसरों के दुःख दूर करने वाले के अपने दुःख आपेही दूर हो जाते हैं। यह ड्यूटी बहुत अच्छी है, दूसरों के दुःख दूर करते चलो। ●●●

पत्र सम्पादक के नाम

'ज्ञानामृत पत्रिका' अतुलनीय है। विज्ञापन रहित होते भी पत्रिका लाभ में चल रही है, यह बाबा की कृपा है। नव पत्रिका 'राजी खुशी' के उज्ज्वल भविष्य की हम कामना करते हैं। जुलाई के सम्पादकीय में स्पष्टवादिता, सादगी, अतिथि-सत्कार, गम्भीरता, सन्तुष्टता, सहयोग, त्याग व सेवा भावना को उजागर किया गया है। 'एक स्वच्छता यह भी' लेख में बताया गया है कि तामसिक भोजन खाने से जैसे हाजमा बिगड़ जाता है, वैसे ही व्यर्थ की बातें सुनने-सुनाने से आत्मा का हाजमा बिगड़ जाता है। बातों-समस्याओं को भूल आगे बढ़ो। गीता बहन ने लिखा, यदि जीवन में आनन्द है, तो जीवन सरस लगता है। सुख-शान्ति का आधार सहज राजयोग है।

चन्डी प्रसाद उनियाल, दिलशाद कालोनी (दिल्ली)

जुलाई, 2019 के अंक का पठन किया। प्रथम पृष्ठ पर आदरणीया दादी जी का 'शुभाशीष', दूसरे पृष्ठ पर सम्पादकीय लेख 'गुणों की गहराई', तीसरा लेख आदरणीया मनमोहिनी जी के गुणों का दर्शन एवं चौथा लेख आदरणीया उर्मिला बहन द्वारा रचित 'एक स्वच्छता यह भी' इन सबने पूरे अंक की शोभा बढ़ा दी। सम्पादकीय में ऐसे घुनों का उल्लेख किया गया है जिससे हम अक्सर अन्जान बने रहते हैं। स्पष्टवादिता, सन्तुष्टता और गम्भीरता ने मुझे विशेषत: स्वयं की कमियों का चिन्तन करने के लिए प्रेरित किया है और अक्सर हम अपने गुण के मोटे रूप में ही खुश हो जाते हैं क्योंकि हम गुण की गहनता से वाकिफ नहीं होते। धन्यवाद आदरणीय सम्पादक महोदय, हमें अच्छी प्रेरणा और सही दिशा देने के लिए।

ब्र.कु.प्रीति खत्री, मालवीय नगर, जयपुर

अगस्त माह की पत्रिका में 'उन्हें गुस्सा नहीं आता' लेख पढ़कर मालूम हुआ कि महान आत्माओं और साधारण आत्माओं में क्या अन्तर होता है। किसी भी स्थिति में विचलित न होना ही महान आत्मा बनाता है। धन्य हैं हमारी दादियाँ।

राजेश कुमार गर्ग, सबलगढ़ (मध्यप्रदेश)

जीवन में प्रथम बार ज्ञानामृत पत्रिका पढ़ने को मिली, खुशी हुई। मई, 2019 अंक में आपका एक लेख है महिलाओं के पक्ष में। इसी संदर्भ में कुछ लिख रहा हूँ। सदियों से भारत पुरुष प्रधान देश रहा है और आज भी है। सरकार ने उन्हें बराबरी का दर्जा देने की बात कहकर उनके जज्बातों को उभार दिया है। मैं भी पक्ष में हूँ लेकिन पहले सभी महिलाओं में प्रबुद्धता लानी होगी। वह नहीं हुआ कारण शिक्षा का रसातल में चले जाना। बेशक महिलाओं पर बहुत अत्याचार होता है, उसका कारण बहुत हद तक वे भी हैं। फैशन, मोबाइल, इन्टरनेट, टी.वी. – इनके चलते महिलाएँ बर्बाद हो रही हैं। आध्यात्मिकता के प्रचार-प्रसार से पतन कुछ कम किया जा सकता है और इसका सशक्त माध्यम आपकी संस्था हो सकती है।

कृष्णकुमार केडिया, नवगछिया (बिहार)

ज्ञानामृत के अगस्त अंक में राजयोगिनी प्रकाशमणि दादी जी का पवित्र जीवन चरित्र पढ़कर आनंदित हुए। आप सचमुच दिव्य गुणों की खान थीं। आपने प्रशासिका बनकर दक्षता से कार्य संभाला तथा 137 देशों में सेवा का उत्थान किया। आपकी सेवा में निमित्त तथा निर्माण भाव था। विश्वशान्ति में आपका बड़ा योगदान था। आपको शान्ति दूत मैडल से छ: बार सुशोभित किया गया। ऐसी धन्य मूर्ति को श्रद्धा सुमन समर्पित करते हैं।

ब्र.कु.अमृतेश्वर तन्डर, अण्णिगेरी (धारवाड़), कर्नाटक

वैश्विक शिखर सम्मेलन समाचार

उद्घाटन सत्र

ब्रह्माकुमारीज संस्थान के अंतर्राष्ट्रीय मुख्यालय आबू रोड, शान्तिवन परिसर में 27 सितम्बर से 1 अक्टूबर तक 'अध्यात्म द्वारा एकता, शान्ति और समृद्धि' विषय पर आयोजित वैश्विक शिखर सम्मेलन में विश्व के 140 देशों से सात हजार से अधिक विद्वान शामिल हुए। इस पाँच दिवसीय सम्मेलन का उद्घाटन करने के बाद अपने अध्यक्षीय उद्बोधन में **भारत के महामहिम उपराष्ट्रपति भ्राता एम.वेंकैया नायडू** ने कहा कि अध्यात्म भारत की पुरानी संस्कृति है। गीता स्वयं ईश्वरीय उपदेश है। महावीर स्वामी, गौतम बुद्ध, स्वामी विवेकानंद, संत रविदास, गुरुनानकदेव आदि महापुरुषों-संतों ने समाज को अध्यात्म के जरिए नई दिशा दी है। ब्रह्माकुमारीज संस्थान भी अध्यात्म और राजयोग मेडिटेशन का संदेश विश्व के 140 देशों में अपने आठ हजार से अधिक सेवाकेन्द्रों के माध्यम से दे रहा है। अध्यात्म से ही विश्व में एकता, शान्ति, समृद्धि आएगी। जीओ और जीने दो, यह हमारी परिपाटी है। मानव सेवा ही माधव सेवा, हमारा संस्कार रहा है। स्वयं को खोजना ही अध्यात्म है।

उपराष्ट्रपति नायडू ने कहा कि अध्यात्म ही धर्म का मूल उद्देश्य है। अपने अस्तित्व का वही विश्लेषण कर सकता है जो खुद से प्रश्न करना जानता हो और अपनी खोज करने का सामर्थ्य रखता हो। जब व्यक्ति के मन में धर्म के नाम पर हिंसा और आतंक का तांडव होने लगता है तो समाज भेदभाव और संकीर्ण भावना का शिकार हो जाता है। हमें इससे बाहर निकलना होगा। जो लोकतंत्र के नाम पर आतंक फैला रहे हैं वे धर्म के विरोधी हैं।

उपराष्ट्रपति नायडू ने कहा कि दुनिया को पीस और प्रोग्रेस की जरूरत है। कोई भी संघर्ष सबसे पहले मानव मस्तिष्क में जन्म लेता है। संघर्ष के विरुद्ध शिक्षा और आध्यात्मिक ज्ञान ही विश्व में समरसता और स्वनियंत्रण सुनिश्चित कर सकता है। आध्यात्मिक ज्ञान से ही दुनिया में शान्ति और सद्भाव आ सकता है।

आध्यात्मिक ज्ञान में ही वह शक्ति है जो विश्व को एकता के सूत्र में बांध सकती है।

उपराष्ट्रपति नायडू ने कहा कि हमने कभी किसी देश पर आक्रमण नहीं किया है क्योंकि हमारी भावना वसुधैव कुटुम्बकम् की रही है। आतंकवाद मानव का दुश्मन है। आज आतंकवाद के विरुद्ध सभी देशों को मिलकर प्रयास करने होंगे, सभी को आगे आना होगा। पूरी दुनिया को एक साथ आतंकवाद को खत्म करने के लिए कदम उठाने होंगे। उन्होंने सवाल करते हुए कहा कि दुनिया के सामने च्वॉइस है कि आपको अमन, सुख-शान्ति चाहिए या रक्तपात? इस पर सभी को विचार करने की जरूरत है। जो देश दुनिया में आतंक फैला रहे हैं, रक्तपात फैला रहे हैं उन्हें सद्बुद्धि की जरूरत है।

हमारी कल्चर में नेचर के प्रति प्यार होना चाहिए तो फ्यूचर बैटर होगा। ब्रह्माकुमारीज संस्था जल संरक्षण, पर्यावरण संरक्षण को लेकर बहुत-बहुत गंभीरतापूर्वक प्रयास कर रही है। संस्था द्वारा हर वर्ष विश्व भर में न केवल लाखों की संख्या में पौधे रोपे जा रहे हैं बल्कि उनका एक परिवार की तरह पालन-पोषण करना पर्यावरण संरक्षण में महत्वपूर्ण योगदान है।

उपराष्ट्रपति नायडू ने कहा कि हमारे प्रधानमंत्री नरेन्द्र मोदी ने ब्रह्माकुमारीज की मुख्य प्रशासिका दादी

जानकी को ब्रांड एंबेसडर बनाया है। संस्था ने अपने प्रयासों से समाज में स्वच्छता का संदेश देने का सराहनीय प्रयास किया है। प्रधानमंत्री ने संयुक्त संघ में संदेश दिया है कि स्वच्छता ही सेवा है। संस्था ने विश्व शान्ति के लिए अपने अभियानों में अपना महत्वपूर्ण सहयोग दिया है। इसके लिए हमारे पूर्व प्रधानमंत्री माननीय अटल बिहारी वाजपेयी जी ने संस्था की पूर्व मुख्य प्रशासिका दादी प्रकाशमणि को सम्मानित किया था। साथ ही संयुक्त राष्ट्र संघ ने संस्था को सात अन्तर्राष्ट्रीय शान्तिदूत पुरस्कारों से सम्मानित किया है। संस्था बेटी बचाओ, बेटी पढ़ाओ, महिला सशक्तिकरण को लेकर समाज में नव संदेश देने के साथ जागरूक कर रही है।

राजस्थान के राज्यपाल महामहिम भ्राता कलराज मिश्र ने कहा कि आध्यात्मिकता महत्वपूर्ण और गंभीर विषय है। व्यक्ति-व्यक्ति से सम्बन्धित है। अपनी आत्म जागृति को जागृत करना ही अध्यात्म है। पाप-पुण्य के विश्लेषण से अनुशासन की भावना जागृत होती है। इससे ही विश्व में शान्ति

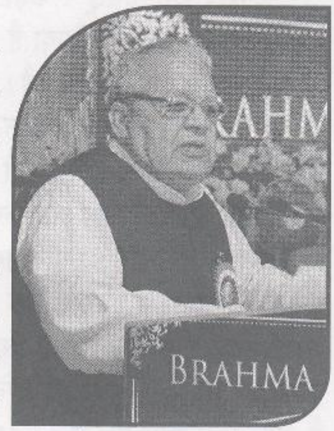

और समृद्धि आएगी। ये गौरव का विषय है कि ब्रह्माकुमारी संस्था नारी शक्ति द्वारा संचालित वैश्विक संगठन है, जो आध्यात्मिक ज्ञान से ही आगे बढ़ रही है और समाज को सकारात्मकता की ओर ले जा रही है। संस्था ने, शुरूआत में तमाम विरोधों के बाद भी 83 वर्षों से विश्वभर में आध्यात्मिक ज्ञान को पहुँचाया है। 103 साल की उम्र में भी दादी जानकी इसकी कुशल प्रशासक हैं, ये योग से ही संभव है। नारी का आध्यात्मिक शक्तिकरण देवत्व के भाव को साकार कर रहा है। संस्था हर वर्ष लाखों की संख्या में पौधारोपण कर पर्यावरण बचाने का अभिनव प्रयास कर रही है। यहाँ से मानव जीवन को सुखी और समृद्ध बनाने का प्रयास किया जा रहा है। आज ऐसे प्रयासों की दुनिया को जरूरत है।

संस्था की मुखिया 103 वर्षीय **दादी जानकी** ने कहा कि सदा याद रखें, मैं (आत्मा) कौन और मेरा (परमात्मा) कौन। हम सभी एक परमात्मा की संतान हैं। परमात्मा हम सभी आत्माओं के पिता, शिक्षक, सखा और सद्गुरु हैं। अध्यात्म के ज्ञान से ही दुनिया बदलेगी। खुद को धन्य समझती हूँ कि परमात्मा ने मुझे अपने

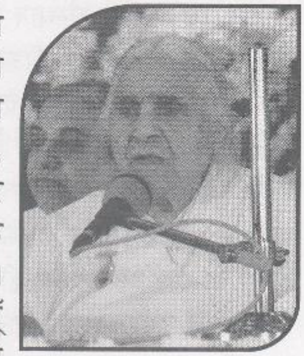

कार्य में सहयोगी बनाया। इस दौरान दादी ने उपराष्ट्रपति की तरफ इशारा करते हुए कहा कि जो मेरा पिता है, वही आपका भी है।

केन्द्रीय जल संसाधन मंत्री **अर्जुनराम मेघवाल** ने कहा कि अध्यात्म और पर्यावरण का समन्वय समय की मांग है। सरकार की ओर से चलाई जा रही योजनाओं को ब्रह्माकुमारी संगठन का समय अनुरूप

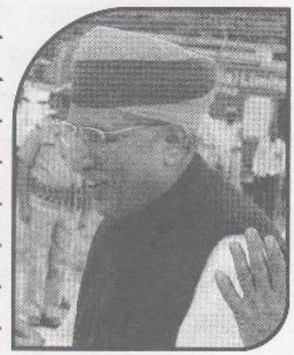

पर्याप्त सहयोग मिल रहा है। इस भागीरथ कार्य में समाज के हर वर्ग को एकजुट होकर अपनी सहभागिता सुनिश्चित करनी होगी।

संस्था की संयुक्त प्रशासिका **दादी रतनमोहिनी** ने कहा कि भले ही हम शारीरिक रूप से अलग-अलग देशों, वर्गों से हैं लेकिन हम सभी एक ही परमात्मा पिता के बच्चे हैं। परमात्मा हम सबका है। इस भावना से ही विश्व का नवनिर्माण होगा।

वन एवं पर्यावरण राज्यमंत्री भ्राता सुखराम विश्नोई, ब्रह्माकुमारी संगठन के महासचिव ब्र.कु.निर्वैर भाई, कार्यक्रम के संयोजक ब्र.कु.मृत्युंजय भाई, संस्थान की कार्यक्रम निदेशिका ब्र.कु.मुन्नी बहन तथा ब्र.कु.हंसा बहन ने भी अपने विचार रखे। इस दौरान राज्यमंत्री ओटाराम देवासी, विधायक समाराम गरासिया भी मौजूद रहे। संचालन वरिष्ठ राजयोग शिक्षिका ब्र.कु.शीलू बहन ने किया।

स्वागत सत्र -- वैश्विक शिखर सम्मेलन

समारोह के स्वागत सत्र में मुख्य अतिथि केन्द्रीय इस्पात राज्यमंत्री **फग्गन सिंह कुलस्ते** ने कहा कि महिलाओं के साथ हो रहे दुराचार, अमानवीय कृत्यों की रोकथाम के कारगर प्रयास करने होंगे, जिसके लिए ब्रह्माकुमारीज महिलाओं के संगठन ने समाज को सही दिशा देने का जो बीड़ा उठाया है उसमें हम सबको कंधे से कंधा मिलाकर सहयोगी बनना होगा। मन की आसुरी वृत्तियों को समाप्त करने के लिए ईश्वर की वास्तविकता को समझने की जरूरत है। यहाँ आकर ईश्वरीय शक्ति की महसूसता हो रही है। ईश्वर ने यदि आपको इस लायक बनाया है तो आपके मन में सभी के प्रति समभाव होना चाहिए। कोई भेद नहीं होना चाहिए न समाज के प्रति, न देश के प्रति और न इंसान के प्रति।

कोयम्बटूर से पधारे के.जी.हॉस्पिटल के चेयरमैन **पद्मश्री डॉ.जी.भक्तवत्सलम** ने कहा कि 12 साल पहले राजयोग मेडिटेशन ने मेरा जीवन पूरी तरह से बदल दिया। ये संस्था विश्व में मिसाल कायम कर रही है।

हैदराबाद से पधारी प्रज्वला कंपनी की संस्थापक **पद्मश्री सुनीता कृष्णन** ने कहा कि महिलाओं और बच्चियों के प्रति देश में यौन अपराधों में तेजी से इजाफा हुआ है। सरकारें और समाज मौन हैं। बच्चियों पर बंदिश लगाने के बजाय घरों में बेटों को ये समझाने की जरूरत है कि स्त्री भोग की वस्तु नहीं है। छोटी-छोटी बच्चियाँ घरों में भी सुरक्षित नहीं हैं, ये मौन तोड़ना होगा। ब्रह्माकुमारीज संस्था महिलाओं की बड़ी सेना के जरिए लोगों को आत्मिक रूप से सशक्त करने में जुटी हुई है। साथ ही ये संस्था महिला सशक्तिकरण की मिसाल है। अलख जगाकर सैकड़ों महिलाओं और बच्चियों को वेश्यावृत्ति के दलदल से बाहर निकालकर समाज में एक मिसाल कायम की है।

यू.एस.ए.से पधारी मेरीलैंड की अध्यात्म प्रमुख **म्यर्टल ऐनी ब्रिस्टल** ने कहा कि यहाँ देह अभिमानी की बजाय आत्माभिमानी का भान है। यदि उसे अंगीकार किया जाए तो विश्व में एकता, शान्ति और समृद्धि लाई जा सकती है। पश्चिमी देशों में भारत के आध्यात्मिक ज्ञान को बड़ी उम्मीद के साथ देखा जा रहा है। ये संस्था इस दिशा में महत्वपूर्ण भूमिका निभा रही है।

उड़ीसा बालासोर की फकीर मोहन यूनिवर्सिटी की वॉइस चांसलर **प्रो.मधुलिता दास** ने कहा कि ये संस्था समाज में सकारात्मक विचारों के माध्यम से लोगों को बेहतर जीवन जीने की प्रेरणा दे रही है।

नेपाल से पधारे सुप्रीम कोर्ट के जस्टिस **पुरुषोत्तम भंडारी** ने कहा कि आध्यात्मिक ज्ञान ही दुनिया को बदल सकता है। ये ज्ञान सभी तक पहुँचाने की जरूरत है।

सांसद **कौशलेन्द्र कुमार** ने कहा कि यहाँ बहनों में सेवा के प्रति निष्ठा देखकर अभिभूत हूँ। महिलाओं में पुरुषों से ज्यादा क्षमता है।

खुले सत्र -- वैश्विक शिखर सम्मेलन

वैश्विक शिखर सम्मेलन के विभिन्न खुले सत्रों में पधारे महानुभावों में से **केन्द्रीय कानून मंत्री रविशंकर प्रसाद** ने कहा कि ब्रह्माकुमारी संगठन की ओर से नारी शक्ति के सम्मान में जो कार्य किया जा रहा है वह दुनिया में मिसाल कायम। भारत की

नहीं है बल्कि भारत की पहचान उसकी आध्यात्मिकता से है। ब्रह्माकुमारीज के इस परिसर में आध्यात्मिक ऊर्जा, उत्साह, शान्ति, सद्भाव का प्रेरणादाई अनुभव हो रहा है।

ब्रह्माकुमारी संस्था का विश्व के 140 देशों में चेतना जागृति, ध्यान, आत्म सशक्तिकरण, राजयोग मेडिटेशन का अनवरत रूप से चल रहा कार्य साधारण नहीं है, यह परमसत्ता का ही कार्य है। परमसत्ता की सच्चाई अविभाज्य है। आंतरिक भाव से ही सत्य को खोजा जा सकता है। स्वामी रामकृष्ण परमहंस, स्वामी विवेकानंद, महात्मा गांधी आदि ने अपने-अपने तरीके से सत्य की खोज की। भारत ने दुनिया को युद्ध नहीं बल्कि बुद्ध दिया है।

कानून मंत्री प्रसाद ने कहा कि ब्रह्माकुमारीज व्यक्ति के चरित्र का निर्माण करती है। चरित्र निर्माण के लिए आंतरिक परिवर्तन की शक्ति राजयोग से प्राप्त होती है। अध्यात्म में भी पर्यावरण को सुखद बनाने की परंपरा रही है जिसके परिणामस्वरूप भारतीय संस्कृति में पेड़ों का भी सम्मान होता है। दादी जानकी 103 वर्ष की होते हुए भी महिला शक्ति को आगे बढ़ाने का कार्य कर रही हैं। दादी जानकी भारत की विशिष्टता हैं। जैसी हमारी दृष्टि होती है, वैसी ही वृत्ति, कृति और सृष्टि का निर्माण होता है।

उन्होंने कहा कि पत्रकार आलोचना और व्यंग करें लेकिन ब्रह्माकुमारीज जैसे व्यक्ति निर्माण के कामों को भी बताएँ। देश में 18 हजार अखबार और 250 न्यूज चैनल हैं पर आज भी समाज में हो रहे अच्छे कार्य लोगों तक कम पहुँच रहे हैं। ब्रह्माकुमारीज जो व्यक्ति के चारित्रिक उत्थान, आध्यात्मिक विकास और सम्पूर्ण मानव जाति के कल्याण के लिए कार्य कर रही है, मीडिया उसे लोगों को बताए, लोग सुधरेंगे। सोशल मीडिया को सही तरीके से उपयोग में लिया जाना चाहिए, इसमें हिंसा और अलगाववाद को स्थान नहीं दिया जाना चाहिए। लोकतंत्र में कानून अपना काम कर रहा है। हमने महिलाओं पर हो रहे अत्याचारों को देखते हुए तीन तलाक हटाने, अनुच्छेद 370 को खत्म करने और बच्चों के विकास को लेकर कानून बनाए हैं।

केन्द्रीय गृह राज्यमंत्री जी.कृष्ण रेड्डी ने कहा कि आध्यात्मिक शक्ति हमें सही दिशा दिखाती है और बुराइयों से मुक्त करती है। ऋषि-मुनियों ने भी इसका महत्व समझकर साधना की। राजयोग से मन को गहन शान्ति मिलती है। स्व परिवर्तन से विश्व परिवर्तन बी.के.का स्लोगन है। हम उस देश के वासी हैं जिसने सदा दिया ही दिया है।

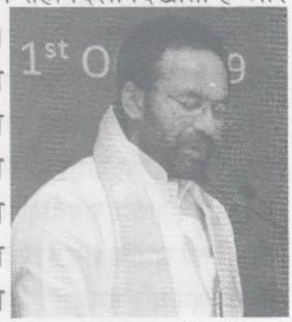

विशिष्ट अतिथि नेपाल सरकार के अधोसंरचना विकास मंत्री **बैजनाथ चौधरी** ने कहा कि हमने संकल्प लिया है कि नेपाल की जनता को कम से कम एक बार ब्रह्माकुमारीज के ज्ञान से अवगत करवाएँ, इसके लिए हम कार्यक्रम करेंगे। बुद्ध ने ढाई हजार साल पहले मन की शान्ति का पाठ पढ़ाया। जो देश खुद को सुपर पावर कहता है, वहाँ लोग सबसे ज्यादा आत्महत्या कर रहे हैं। नेपाल विकासशील देश है पर हमारे यहाँ आत्महत्या की दर कम है क्योंकि हमारे यहाँ ब्रह्माकुमारीज कार्य कर रही हैं। हमारे 72 जिलों में 1500 ब्रह्माकुमारीज सेंटर हैं। नेपाल जाकर ब्रह्माकुमारीज के और सेंटर खोलने के लिए प्रतिबद्धता व्यक्त करता हूँ।

उत्तर प्रदेश सीतामऊ से चौथी बार सांसद चुने गए **राजेश वर्मा** ने कहा कि भारत सरकार ने तो अभी स्वच्छता अभियान शुरू किया है लेकिन ब्रह्माकुमारीज संस्थान तो कई वर्षों से स्वच्छता को जीवनशैली में धारण कर, स्वच्छता अपना रही है और संदेश दे रही है। यहाँ आकर मैंने जो समर्पण भाव, एकता, शान्ति, स्वच्छता और सौर ऊर्जा का सदुपयोग करना सीखा है उसे अपने संसदीय क्षेत्र के 12 लाख मतदाताओं को कार्यक्रम आयोजित कर बताएँगे। यहाँ रोजाना एक मेगावॉट बिजली का उत्पादन हो रहा है, ये गौरव का विषय है।

वैश्विक शिखर सम्मेलन के केन्द्रीय पशुधन विकास, लघु, मध्यम उद्योग राज्यमंत्री **प्रताप चंद्र सारंगी** ने कहा कि मैं वैज्ञानिकों को कहना चाहूँगा कि मंगल में जीवन पर अनुसंधान करने की बजाय जीवन में मंगल है कि नहीं, इस पर अनुसंधान करें। दुनिया में आज सबसे ज्यादा सद्भावना, शान्ति और प्रेम की जरूरत है जो अध्यात्म से ही आएगी। यूरोप में विज्ञान और अध्यात्म में प्रतिस्पर्धा है। हमारे देश में विज्ञान और अध्यात्म एक साथ चलते हैं, एक-दूसरे के पूरक हैं। विज्ञान बहुत गहरी रिसर्च है, इससे हम भौतिक तरक्की कर रहे हैं पर खुद को जानना अध्यात्म है। हम दुनिया को तो जान रहे हैं पर खुद को नहीं जान रहे हैं।

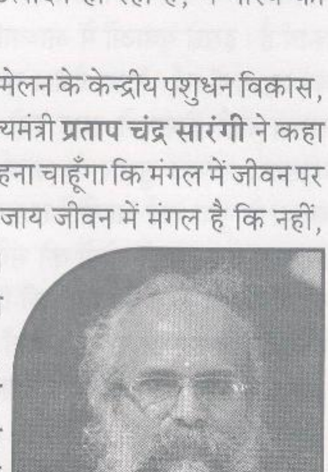

केन्द्रीय राज्यमंत्री ने कहा कि ब्रह्माकुमारीज का ज्ञान बहुत ऊँचा है। ये सीधे परमात्मा से जोड़ता है। राजयोग मेडिटेशन ईश्वर से जोड़ता है। यहाँ का पूरा वातावरण प्रभावित करने वाला है। मैं यहाँ आकर इस दिव्य वातावरण से प्रभावित हूँ। यहाँ विशेष रूप से स्वच्छता का माहौल देखने को मिला। ये संस्था मानव समाज को बहुत ऊँचाई पर ले जाने का काम कर रही है। ब्रह्माकुमारीज महान संगठन है क्योंकि यहाँ से सब को प्रेम करने की शिक्षा दी जाती है।

केन्द्रीय राज्यमंत्री सारंगी ने कहा कि हमारी संस्कृति है कि कमजोर की रक्षा करें। पहले पति, पत्नी के प्रति; बच्चे, माँ-बाप के प्रति अपने कर्तव्य का सहजता से पालन करते थे। आज के जमाने में बच्चे अपने माता-पिता के प्रति अपना कर्त्तव्य नहीं निभा रहे हैं, यही कारण है कि ऐसे कानून बनाने पड़ रहे हैं कि वे अपने कर्त्तव्यों का पालन करें। जब अपने कर्त्तव्यों को करवाने के लिए कानून बनाने पड़ें तो समझ जाइए कि हमारा राष्ट्रीय चरित्र क्या हो गया है। प्रकृति के विरुद्ध हम कुछ करेंगे तो आपदा आती है। पर्यावरण का संरक्षण हम सभी को मिल कर करना होगा। आज प्लास्टिक और प्रदूषण मानव के लिए सबसे बड़ा खतरा है। हमारे प्रधान मंत्री सिंगल यूज प्लास्टिक नहीं उपयोग करने को बढ़ावा दे रहे हैं।

दादी जानकी को शान्ति एवं सद्भाव से नवाजा

महात्मा गांधी की 150वीं जयंती के उपलक्ष्य में गुजरात इलेक्ट्रिसिटी बोर्ड द्वारा संस्थान की मुख्य प्रशासिका 103 वर्षीया दादी जानकी और संस्थान के कार्यकारी सचिव ब्र.कु. मृत्युंजय को शान्ति एवं सद्भाव सम्मान से नवाजा गया।

मध्यप्रदेश सरकार के लोक स्वास्थ्य यांत्रिकी मंत्री **सुखदेव फांसे** ने कहा कि ब्रह्माकुमारीज स्वर्णिम भारत की परिकल्पना को साकर कर रही है। संस्था समाज में सकारात्मक क्रांतिकारी परिवर्तन का कार्य कर रही है। प्रकृति का संतुलन बिगड़ता जा रहा है। जल, पर्यावरण, ऊर्जा संरक्षण को लेकर बहुत गम्भीर होने की जरूरत है। इसके लिए ब्रह्माकुमारी संस्था के कार्य समाज के सामने खुली किताब की तरह हैं। सर्व के सहयोग से ही प्रकृति के संतुलन को सही दिशा में लाया जा सकता है। उन्होंने आह्वान किया कि जल बचाने के लिए सभी अपने स्तर पर प्रयास करें।

समापन सत्र -- वैश्विक शिखर सम्मेलन

वैश्विक शिखर सम्मेलन के समापन सत्र में **लोकसभा स्पीकर ओम बिरला** ने कहा कि मानवीय मूल्य कम हो रहे हैं। कई देश आपस में लड़ रहे हैं, हिंसा का वातावरण फैला रहे हैं। एक देश से दूसरे देश में युद्ध का तनाव बढ़ रहा है, ऐसे में भारत ही है जो सम्पूर्ण विश्व में शान्ति, सद्भाव और समृद्धि का संदेश दे रहा है। भारत का विश्व में मान-सम्मान बढ़ रहा है। महात्मा गांधी जी ने भी वर्षों पहले विश्वभर में शान्ति और अहिंसा का संदेश दिया था जिसे आज भी दुनिया मानती है। शान्ति, सद्भाव, नैतिकता, परोपकार, सत्कर्म तो हमारी संस्कृति रही है। सदियों से भारत विश्व में अध्यात्म की गंगा बहा रहा है। भारत विश्वगुरु था और फिर से बनने जा रहा है। इसमें ब्रह्माकुमारीज संस्थान की अहम भूमिका रहेगी क्योंकि ये संस्था न केवल भारत बल्कि विश्व के 140 देशों में अध्यात्म की अलख जगा रही है। संस्था से जुड़कर लाखों युवा भाई-बहनें लोगों को आध्यात्मिकता अपनाने का संदेश दे रहे हैं। लाखों परिवार तन-मन-धन से इस कार्य को आगे बढ़ाने में समर्पित रूप से जुटे हुए हैं।

लोकसभा स्पीकर बिरला ने कहा कि युवाओं में ऊर्जा होती है और उन पर सभी की नजर होती है। युवा भौतिकता को छोड़ आध्यात्मिकता से जुड़ें, युवा ही

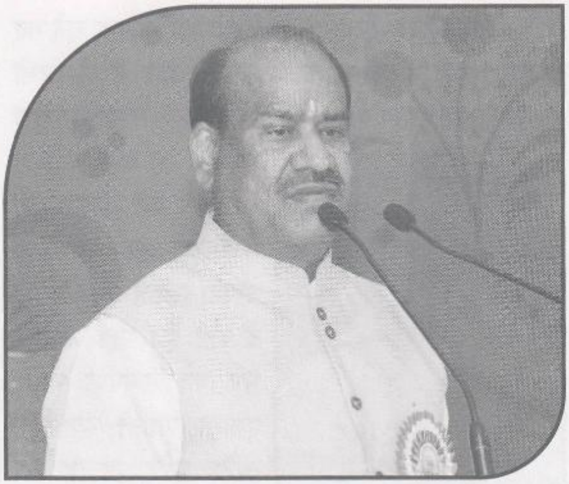

संदेश दे सकते हैं। यदि भारत को सही दिशा देनी है तो युवा को सही दिशा देनी होगी। ब्रह्माकुमारीज ने विश्वविद्यालयों से जुड़कर मूल्य शिक्षा एवं अध्यात्म को पाठ्यक्रम में शामिल किया है, जो बहुत ही सराहनीय कार्य है। इससे युवाओं में आध्यात्मिकता के प्रति रुझान बढ़ेगा, उन्हें नई दिशा देगा। युवाओं की ऊर्जा को ये संस्था सही दिशा में लगा रही है, उन्हें अध्यात्म से जोड़कर समाज सुधार के कार्य से जोड़ा जा रहा है। संस्था के युवा भाई-बहनों ने हजारों किमी की पैदल यात्रा निकाल कर लाखों लोगों को संदेश दिया है, आज ऐसे कार्यों की जरूरत है। यहाँ की शिक्षा लेकर प्रेरणादायी नौजवान तैयार हो रहे हैं। यहाँ की शिक्षा शान्ति पर आधारित है। वर्षों पहले लगाया गया छोटा-सा पौधा आज वटवृक्ष बन गया है।

बिरला ने कहा कि बिना मानसिक स्वास्थ्य के कोई देश या राष्ट्र समृद्धि की ओर नहीं बढ़ सकता है। अध्यात्म से आंतरिक शान्ति आती है। यहाँ से संदेश दिया जा रहा है कि परमात्मा एक हैं। दादी जानकी 103 वर्ष की उम्र में भी हजारों ब्रह्माकुमारी बहनों तथा भारत के साथ विश्व भर के साढ़े आठ हजार सेवाकेन्द्रों को मार्गदर्शन कर रही हैं। संस्था आध्यात्मिक ज्ञान के साथ सामाजिक कार्यों में भी बढ़-चढ़कर अपनी भूमिका निभा रही है। ●●●

वारिस कौन ?

●●● ब्रह्माकुमारी उर्मिला, शान्तिवन

एक बार एक किसान के खेत में एक तोता (Parrot) घुस गया और गेहूँ की चार बालियाँ एक साथ चोंच में दबाकर उड़ने लगा। किसान ने उसे रोका और पूछा, हे शुक, एक साथ चार-चार बालियों का आप क्या करेंगे, आपका उदर तो बहुत छोटा है, क्या इसमें ये सब समा पाएँगी? किसान की बात सुनकर तोता ठहर गया और बताने लगा कि एक बाली कर्ज उतारने के लिए, दूसरी बाली कर्ज चढ़ाने के लिए, तीसरी बाली परोपकार के लिए और चौथी बाली जीवन-व्यवहार के लिए। किसान ने कहा, हे ज्ञानी शुक, मैं कुछ समझा नहीं, थोड़ा विस्तार से बताओ कि इन चारों का तुम क्या करोगे? तब तोते ने कहा, अन्नदाता, एक बाली मेरे बूढ़े माँ-बाप के लिए है। जन्म और पालना देकर जो कर्ज उन्होंने मुझ पर चढ़ाया है, उससे मैं इस प्रकार उऋण हो जाऊँगा। दूसरी बाली मेरे नन्हें बच्चों के लिए है। वे अभी असमर्थ हैं, उनकी पालना करके उन्हें मैं कर्ज दे रहा हूँ जिसका भुगतान वे भविष्य में करेंगे। मेरा पड़ोसी बीमार है, उड़ नहीं सकता, तीसरी बाली उसको देकर परोपकार का खाता अर्जित करूँगा और चौथी बाली इस पेट के लिए है जिससे जीवन-व्यवहार चलता रह सके।

तोते की बात सुनकर किसान बड़ा खुश हुआ और उसे जाने दिया। तोते के माध्यम से इस कहानी में मानव को सीख दी गई है कि वह अपने धन-साधनों का इस प्रकार बँटवारा करे कि परमार्थ भी निभे और व्यवहार भी।

हम ना सही, हमारे वारिस तो खाएँगे

परन्तु, वर्तमान युग में अधिकतर मानव व्यवहार के बारे में इतना सोचते हैं कि परमार्थ की अवहेलना कर

इतना समय, संकल्प और ऊर्जा लगा देते हैं मानो उन्हें कई हजार वर्ष जीना हो और उपभोग करना हो। किसी ने सत्य ही कहा है, 'सामान सौ वर्ष का, पल की खबर नहीं।' जब यह बात उन्हें कही जाती है तो उनका उत्तर होता है कि हम ना सही परन्तु हमारे वारिस तो खाएँगे, उनके लिए जोड़ना भी तो हमारा फर्ज है। परन्तु, क्या हम जानते हैं, वारिस कौन? वारिस का सही अर्थ क्या है?

पुण्य कर्म ही सच्चा वारिस

हम वारिस का मतलब समझते हैं सन्तान, जो हमारी मृत्यु के बाद, पीछे छोड़ा हुआ हमारा धन-सामान सम्भाले, जिसके नाम पर हम वसियत करते हैं। उसमें भी पुत्र को वारिस मानते हैं, जो आगे वंश को चलाए, जो चारदीवारी के घर की सम्भाल करे परन्तु सवाल यह भी तो है कि हम आगे क्या लेकर जाएंगे? पीछे जो छूटा, उसका तो प्रबन्ध कर लिया परन्तु आगे हमारे साथ क्या जाएगा? क्या उसका प्रबन्ध किया? अतः आध्यात्मिक रूप से वारिस का अर्थ है अपने अगले जन्म को तैयार करना, पुण्य कर्म रूपी कमाई एकत्रित करना, अपने अगले जन्म को सुधारना। जिसे हम धन देकर जायेंगे वह हमारा अनुकरण करेगा या नहीं, हमें मालूम नहीं परन्तु हम श्रेष्ठ कर्म करेंगे तो आगे का श्रेष्ठ होगा ही, यह

नाम तो चले पर कैसे?

हर मनुष्य चाहता है कि उसके जाने के बाद भी संसार में उसका नाम चले, इसके लिए एक पुत्र तो चाहिए परन्तु नाम किस आधार पर चलता है? यादगार शास्त्र महाभारत साक्षी है, एकसौ पुत्रों के पिता धृतराष्ट्र का नाम डूब गया और पुत्रहीन पितामह भीष्म का नाम तर गया। किसी ने अपना या अपनी सन्तान का नाम धृतराष्ट्र नहीं रखा होगा पर बहुत लोग भीष्म नाम रखकर या रखवाकर उन्हें आज तक आदरणीय, माननीय और स्मरणीय बनाए हुए हैं। क्या विवेकानंद का नाम पुत्र से चला? आज कोई सौ करोड़ का भवन बनाता है और लिखवा देता है 'विवेकानन्द महाविद्यालय'। भारत और विदेशों में उनके नाम से कितने संस्थान हैं! सगे पुत्र तो हमारे घर पर भी हमारा नाम नहीं लिखाना चाहते परन्तु बिना सगे पुत्रों के, लाखों जिनकी यादगारें बना रहे हैं, ये सब उनके श्रेष्ठ कर्म रूपी पुत्रों के कारण ही है। क्या महात्मा गांधी का नाम पुत्रों से चला? क्या मदर टेरेसा, झाँसी की रानी, दादी प्रकाशमणि पुत्रों के कारण महिमामयी बनी? ये सब अपने-अपने कर्मों के कारण प्रात: स्मरणीय बने। अत: संसार में नाम चलाने वाले सच्चे वारिस हैं हमारे श्रेष्ठ कर्म, पुण्य कर्म जो हमारे जाने के बाद भी लोगों के दिलों में स्थान बनाए रखते हैं और हमारी अगली यात्रा को सुगम बनाते हैं। ये पुण्य कर्म रूपी वारिस एक जन्म नहीं, जन्म-जन्म हमारी सेवा करते हैं। अत: पुण्य कर्म रूपी वारिस तैयार कीजिए।

तुलसीदास जी ने कहा है:

सुत दारा अरु लक्ष्मी पापी के भी होय।
तुलसी सत्संग, हरिभजन दुर्लभ हैं ये दोय।।

भावार्थ है कि पुत्र, पत्नी और धन – ये तो पापियों के भी होते हैं परन्तु सत्संग और ईश्वरप्रेम, ये दोनों ही दुर्लभ चीजें हैं। सन्तान या वारिस पाना कोई दुर्लभ प्राप्ति नहीं है, दुर्लभ प्राप्ति है ईश्वर में मन लगाकर, ईश्वर के सभी बच्चों का कल्याण करना। यह श्रेष्ठ कर्म ही सच्चा वारिस है।

हर जन्म बोना, हर जन्म पाना

आज हम कहते हैं कि भगवान का दिया हमारे पास इस जन्म में सब कुछ है। भले ही हमने इस जन्म में भगवान की कोई भक्ति, दान, पुण्य, सत्संग आदि नहीं किया, फिर भी हमारे पास बहुत सुख-साधन हैं और आगे भी होंगे ही, पूर्ण विश्वास से हम कहते हैं परन्तु यह हमारी भूल है। जिस प्रकार फसल हर बार बोनी पड़ती है और उसका फल भी हमें हर बार मिलता है, उसी प्रकार पुण्य कर्मों के बीज भी हर जन्म में बोने पड़ते हैं, तभी अगले जन्म में उनके फल खाने को मिलते हैं। कोई एक ही बार अच्छी फसल बो ले और सोचे कि आगे के 25 वर्षों तक यही चलती रहेगी, ऐसा नहीं हो सकता। हर बार ताजी बोनी पड़ती है, तभी ताजी खाने को मिलती है। पीछे का स्टाक तो बासी हो जाता है, उसमें ताजे जैसा स्वाद भी नहीं रहता। आज हमारे पास जो भी कुछ है, वह बासी है, पिछले बोए का फल है, आगे तक यह बासी नहीं चलेगा, ताजा बोना पड़ेगा। कोई कह सकता है कि पुण्य का फल आगे तक क्यों नहीं चल सकता, पुण्य को कोई सहेज कर रखे तो कई पीढ़ी तक नहीं चल सकता क्या? इस पर विचार करें। एक व्यक्ति को पुण्य कर्मों के रूप में एक ऐसे घर में जन्म मिला है जहाँ वह 100 एकड़ जमीन का इकलौता वारिस है। हर साल लाखों रुपये उस जमीन के किराए के रूप में उसे घर बैठे मिल जाते हैं। कहावत है, बैठे मिले खाने, कोई क्यों जाए कमाने? इस व्यक्ति को कोई कार्य नहीं है। बिना कार्य वाले के लिए कहा जाता है, खाली मन शैतान का घर। इतनी आमदनी, जो बिना मेहनत प्राप्त हो रही है, इसके सदुपयोग की, पुण्य में लगाने की कोई योजना इसके पास नहीं है और पाप में लगाने की योजना बनानी नहीं पड़ती। यह खाली मन वाला व्यक्ति इसे शराब, जुआ, ताश, खर्चीले सामाजिक आयोजनों में पानी की तरह बहा देता है। जीवन का अन्त आते-आते खुद तो शारीरिक रूप से व्यसनों के कारण अशक्त हो ही जाता है, सन्तान को भी संस्कार नहीं दे पाता है। कुसंस्कारी पुत्रों में बँटकर उसके

सामने ही भूमि के कई टुकड़े हो जाते हैं और अब अमीरी गत वैभव के रूप में गाने की चीज मात्र रह जाती है। अगली पीढ़ी तक भी वह साथ नहीं निभा पाती है। अत: पिछला, बासी खाते-खाते व्यक्ति इतना अकर्मण्य हो जाता है कि आगे के लिए बोने का सामर्थ्य ही नहीं जुटा पाता।

भारत में आज से 100 वर्ष पहले के कई वैभवशाली परिवारों के, कई वारिस, कई स्थानों पर आज हैण्ड टू माउथ (गरीबी की) हालत में जीवन व्यतीत कर रहे हैं। केवल 100 वर्षों में वैभव कहाँ चला गया? हमारी भोगवृत्ति की भेंट चढ़ गया। पूर्व का फल जब इस जन्म में बिना मेहनत मिला तो हम कर्मगति को भुला बैठे। हम उसे पाकर उच्छृंखल भोग में मशगूल हो गए। हमें याद ही नहीं रहा कि हमें आगे के लिए भी पुण्य का खाता जुटाना है। भोगवृत्ति के साथ जब चारित्रिक दुर्गुण भी आ मिलते हैं तो खाता तेजी से खाली होता है। खाने और उड़ाने से तो गोदाम भी खाली हो जाते हैं और मेहनत करके, पुण्य के बीज बोने से आधी बोरी भी गोदाम में तब्दील हो जाती है। अत: यह हमारा भ्रम है कि जैसे आज भगवान ने दे रखा है, आगे भी देता रहेगा। आज जो मिला है वह पिछले पुण्य के बीजों का फल है, आगे भी ये बीज बोते रहना होगा, तभी मिलता भी रहेगा, नहीं तो न बीज, न फल वाली स्थिति का सामना करना पड़ेगा।

बासी भोजन और भिक्षाटन

एक बार एक सत्संग प्रेमी, दानी, निरन्तर परोपकार, परमार्थ और सत्कर्मों में लगे रहने वाला व्यक्ति था। उसकी एक कन्या का विवाह तय हुआ परन्तु वह परिवार दानी, सत्संगी, परमार्थी और परोपकारी न था।

एक दिन वह लड़की अपनी सास के साथ बैठी थी, द्वार पर एक भिक्षुक आया तथा भिक्षा-याचना की। सास ने कहा, बहू, जाओ, कह दो, बाबा आगे जाओ, यहाँ कुछ नहीं है। उसने वैसा ही कह दिया। भिक्षुक ने पूछा, बेटी, फिर तुम क्या खाते हो? वह बोली, हम बासी भोजन खाते हैं। भिक्षुक ने पूछा, जब बासी भोजन खत्म हो जाएगा फिर क्या करेंगे? वह बोली, फिर आपकी तरह भिक्षाटन करेंगे।

सास यह सारा वृत्तान्त सुन रही थी, वह बहू पर बहुत बिगड़ी और शाम को घर लौटे अपने पति को सब कह सुनाया। ससुर ने बहू को बुलाकर, सारी बात सुनकर शान्ति से पूछा, बेटी, कब तुम्हें बासी भोजन खाने को मिला? बहू ने कहा, पिताजी हमारे पास जो धन-धान्य है वह हमें क्यों मिला, सभी को तो हमारे जितना नहीं मिला हुआ? दाता तो किसी से भेदभाव नहीं करते परन्तु कर्म-सिद्धांत से हम समझ सकते हैं कि ये हमारे पिछले शुभ कर्मों का फल है। वास्तव में ये बासी भोजन है। यह और आगे तक नहीं चल सकेगा। यदि हम आगे भी वैभव सम्पन्न रहना चाहते हैं तो हमें वर्तमान में भी दान, पुण्य, सत्संग रूपी शुभ कर्मों के ताजे बीज बोने पड़ेंगे।

ससुर को कुछ बात समझ में आई पर एक बात अभी भी समझ से परे थी कि भिक्षाटन क्यों करना पड़ेगा। बहू बोली, आज श्रेष्ठ कर्म नहीं करेंगे तो भाग्य अनुसार जो मिलेगा, उसी में गुजर करना पड़ेगा। जैसे एक भिखारी के पास पसन्द, नापसन्द का कोई विकल्प नहीं होता है, जो मिल जाए उसी में सन्तुष्ट रहना पड़ता है, ऐसे ही हमें भी रहना पड़ेगा।

बहू की ज्ञान भरी बातों से ससुर सहित घर के सभी प्राणियों का ज्ञान-चक्षु खुल गया। वे सभी दान, दया, सत्संग, परोपकार आदि शुभ कर्मों में प्रवृत्त रहने लगे। इस दृष्टान्त से हमें यही सीख लेनी है कि हमें जन्म से प्रारब्ध रूप में जो भी तन, मन, धन मिला है उसे देखकर खुश ना होते रहें, उसे संग्रह कर दबाने में ना लगे रहें, उसे ऐशो-आराम में ना उड़ाते रहें बल्कि उसका सदुपयोग ईश्वरीय कार्य में करें और परमपिता परमात्मा शिव की श्रीमत प्रमाण कर्म करके हम अगले 21 जन्मों के लिए पुण्य कर्म रूपीअपना वारिस तैयार कर लें। ●●●

असंक्रामक रोग और राजयोग

ब्रह्माकुमार डॉ.दिलीप व.कौंडिल्य, एम.डी.,
ठाणे (पश्चिम), मुम्बई

तनाव आधुनिक जीवन शैली का अविभाज्य भाग बन गया है। इसके फलस्वरूप कुछ अनोखी बीमारियों का जन्म हुआ है जिन्हें एन.सी.डी. अर्थात् नॉन कम्यूनिकेबल डिजीज (असंक्रामक रोग) के नाम से जाना जाता है। गरुड़ पुराण में हर पाप के लिए एक विशेष प्रकार की सजा निश्चित की गई है जिसे पढ़कर दिल दहल जाता है और मनुष्य को पापभीरु बना देता है। आज कलियुग के अन्त के भी अन्त में, मनुष्य पैसों के मोह के सामने परमेश्वर तक से नहीं डरता है और बिना झिझक के विकर्म किये जा रहा है। मुम्बई के विश्व में प्रख्यात सर जे.जे.अस्पताल में सेवा के दरम्यान ऐसा अनुभव हुआ कि यहाँ भगवत गीता के कर्मों के सिद्धांत को भी एक ढकोसला माना जा रहा है। ऐसे लोगों को उनकी सीमा बताने के लिए प्रकृति ने एन.सी.डी.की रचना की है।

एन.सी.डी. की भीषण यातनाएँ

एन.सी.डी.बीमारी बड़ी भयानक होती है और जीवन के अन्त तक मनुष्य का साथ नहीं छोड़ती है। तिल-तिल जर्जर बनाती जाती है। इसकी यातनायें कभी-कभी इतनी भीषण होती हैं कि मनुष्य इच्छा मरण की याचना करने लग जाता है। इन बीमारियों का आघात अचानक होता है। एक अच्छा-खासा, चलता-फिरता, हट्टा-कट्टा मनुष्य गलितगात्र हो जाता है, रुग्ण शय्या पर लेट जाता है और शर शय्या की भाँति यातनाओं का अनुभव करता है। कैन्सर की अंतिम अवस्था में तो सबसे शक्तिशाली वेदनाशामक भी काम नहीं करते। अल्झेमर नामक बीमारी में रोगी के रिश्तेदारों का नरकवास होता है।

प्रचण्ड तनाव

आज भारत में कैन्सर का प्रमाण 45 प्रतिशत बढ़ गया है। हर तीसरा भारतीय मधुमेह और अतिरिक्त रक्तदाब का शिकार है। डॉक्टर और हृदयरोग विशेषज्ञ आहार और समुचित व्यायाम को अपनी दिनचर्या में विशेष स्थान देते हैं, फिर भी अचानक हृदयरोग के तीव्र झटके से उनकी जीवन-लीला समाप्त हो जाती है। इसका मुख्य कारण प्रचण्ड स्वरूप का तनाव है। इसके कारण रैडिकल्स नामक भयानक परमाणुओं का निर्माण होता है। ये अतिरेकी परमाणु मानवी शरीर में पेशियों में और अवयवों में घातपात मचाते हैं। युवा पीढ़ी में व्यसन, बर्न आऊट और आत्महत्या का प्रमाण भयानक रीति से बढ़ रहा है। अन्दर आनन्द, संतोष और समाधान नहीं। बहुत ही पॉश मुहल्ले में, झूठी शान से करोड़ों का फ्लैट लेना और फिर कर्ज की किश्तें चुकाने के लिए मर-मर कर, मरते दम तक काम करना, बहुत साधारण-सी बात हो गई है। इसी बीच शरीर छूट गया तो मेहनत का फल कोई और खायेगा, इसका विचार तक आज के मनुष्य के मन में नहीं आता। इसका मतलब साफ है। सार-असार बुद्धि का अभाव है।

आध्यात्मिक शून्यता

डॉ.वीग नामक चंडीगढ़, पी.जी.आई. के प्रख्यात मनोचिकित्सक ने बताया कि आज समाज में विद्यमान 'आध्यात्मिक शून्यता' विवेक शून्यता को जन्म दे रही है। कुछ वर्षों पूर्व, वानप्रस्थ अवस्था आते ही ढलती उम्र के लोग रामायण, भगवद् गीता इत्यादि पढ़ते थे, पूजा-पाठ करते थे, मंदिरों में जाते थे और कीर्तन-भजन में मन

लगाते थे। आज के बूढ़े 'मेन्स ब्यूटी पार्लर' में जाते हैं, स्टायलिश बाल कटवाते हैं या फिर विग लगाकर या हेयर ट्रान्सप्लान्ट कर युवा होने का नाटक करते हैं। षोडषवर्षीय बालिका पर फिदा हुसैन होते हैं। जब प्राण-शक्ति, धन और अच्छे कर्मों का खाता समाप्त हो जाता है तो घर से निकाल कर, किसी वृद्धाश्रम में आखिरी सांसें गिनने के लिए उनको छोड़ दिया जाता है। यहीं से आत्मा का अंतिम युद्ध शुरू हो जाता है। शेष बचे हुए विकर्मों का खाता विभिन्न प्रकार के भोग दिलाता है।

शातिर इन्सान की दलीलें

भोग चार प्रकार के होते हैं – तन, मन, जन और धन। इनमें से एक या अनेक आत्मा को घेर लेते हैं और वार करना आरंभ कर देते हैं। मनुष्य अभिमन्यू की भांति दुख और यातना के चक्कर में फँस जाता है। ऐसी आत्माएँ, जीवन भर परमेश्वर ने जो मदद का हाथ बढ़ाया, उसको पकड़ना नहीं चाहती। अहम् और वहम के कारण खुद को चलाती हैं, फिर आत्मा के अन्त समय के युद्ध में इनका चिल्लाना आरंभ हो जाता है। धन के कारण आया हुआ इनका रोब कहीं गुम हो जाता है। कुरान में भी लिखा है कि कयामत के समय अल्ला ताला जान फूँक कर कब्र से बाहर निकालते हैं। उस समय आत्मा सिर्फ सुन सकती है, देख सकती है और अल्ला ताला के बरसाए हुए कोड़े सह सकती है। इसके पहले अल्ला ताला किये हुए जुर्म और कुफ्र (कृतघ्नता) का हिसाब सुनाते हैं। प्रत्येक इन्सान के कंधों पर दो फरिश्ते होते हैं जो हर सेकन्ड का आलेख रखते हैं। शातिर इन्सान कहता है, 'ये तो खरीदे हुए गवाह हैं।' तब अल्ला ताला सम्पूर्ण जीवन की रील या सी.सी.टी.वी. बनाते हैं। शातिर इन्सान कहता है, 'किसी ने मेरा चेहरा नकल किया है।' तब वह अवयव जिससे विकर्म किया था, गवाही देने लगता है। अब शातिर इन्सान के पास कोई भी दलील शेष नहीं बचती। सजा भोगने के सिवाय और कोई विकल्प नहीं बचता, चाबुक बरसने शुरू हो जाते हैं।

एन.सी.डी. बीमारी माना अल्ला ताला के चाबुक। अमाप धन, रिश्तेदार और महंगी दवाइयाँ कुछ भी काम नहीं आते। ब्रह्माकुमारीज राजयोग में इसी को ही धर्मराज का ट्रिब्युनल बताते हैं। सम्पूर्ण पवित्रता और शुभकामना नहीं अपनाई तो दो नुकसान हो जाते हैं, एक, पदभ्रष्ट होकर निचला पद पाते हैं और दूसरा, सजा खाकर ही जीवन-मुक्ति में माना सुख और शान्ति वाले सतयुग में जा सकते हैं। संगमयुग में विधिपूर्वक किये हुए पुरुषार्थ के आधार पर सतयुग या त्रेतायुग में पद पाते हैं, नहीं तो फिर द्वापर या कलियुग में जन्म लेते हैं। इतनी अवधि को बिन्दु रूप में, परमधाम में शिव परमात्मा के साथ बिताते हैं। तब परमात्मा के साथ की भासना नहीं होती। क्रिकेट के बारावें खिलाड़ी की भांति सिर्फ पैड बांधकर बैठे रहते हैं। करतब-कमाल दिखाने का मौका तक प्राप्त नहीं होता।

अतीव तनाव के कारण मुझे सात असाध्य रोग हुए। राजयोग के नियमित प्रयोग से सब प्रकार के भोग समाप्त हो गए। अब 75 साल की उम्र में सिर्फ चढ़ती कला और उड़ती कला का अनुभव जीवन में हो रहा है। राजयोग कीजिए और आप भी अनुभव लीजिए। ●●●

शीघ्र आवश्यकता

सरोज लालजी महरोत्रा ग्लोबल नर्सिंग कॉलेज एवं ग्लोबल हॉस्पिटल स्कूल ऑफ नर्सिंग, शिवमणि होम के पास, तलहटी आबू रोड, सिरोही, राजस्थान में एक बी.के.हॉस्टल वार्डन (पुरुष, आयु 30 से 45 वर्ष) की आवश्यकता है।

योग्यता : मान्यता प्राप्त विश्वविद्यालय से स्नातक

अनुभव : मान्यता प्राप्त शिक्षण संस्थान में कम से कम 2 वर्ष का अनुभव

संपर्क करें : मोबाइल नं. : 9414143717

ई-मेल : nntagrawal@gmail.com

हर राह ईश्वर तक नहीं पहुँचती

●●● ब्रह्माकुमारी पद्मा, तिनसुकिया (आसाम)

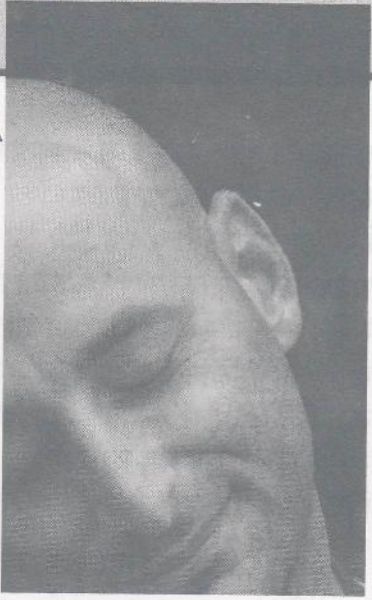

हम सभी अक्सर यह दावा करते हैं कि हम जिस भी धर्म, मत, पंथ या राह पर चल रहे हैं, वह हमें ईश्वर के पास पहुँचा देगी। हम ईश्वर के पास पहुँचना चाहते हैं क्योंकि हम सभी ईश्वर से बहुत प्रेम करते हैं।

दुनिया में कई तरह के प्रेम होते हैं। कइयों का प्रेम मातृभूमि से होता है। इस प्यार में वे अपना जीवन देश पर कुर्बान कर देते हैं। कुछ का प्रेम व्यक्तिगत सम्बन्धों से होता है जैसे माँ का अपने बच्चे से। वह बच्चों पर बलिहार जाती है। दुनिया में आशिक और माशूक के प्रेम के भी कई उदाहरण हैं परन्तु एक ऐसा प्रेम, जो सनातन है, एक जन्म का नहीं परन्तु जन्मों-जन्मों का है, वह है ईश्वर से प्रेम। दुनिया में मुश्किल ही कोई ऐसा होगा जो यह स्वीकार करे कि उसे ईश्वर से प्रेम नहीं है। यहाँ तक कि एक नास्तिक के भी दिल में झाँके तो पाएँगे कि ईश्वर के प्रति मन के किसी कोने में प्रेम, आस्था, भावना और विश्वास अवश्य भरा हुआ है। उस परमात्मा को पाने के लिए, उस तक पहुँचने के लिए, उसकी एक झलक पाने के लिए न जाने कितने साधु, संन्यासी, संत, महात्माओं ने भूखे-प्यासे रहकर, टाँग पर टाँग चढ़ाकर कठोर साधनायें की। उस परमात्मा के प्यार में न जाने कितने प्रभु परवानों ने काशी कलवट खाई। कितने ही कवियों ने ईश्वर के प्रेम में दोहे, गीत, कवितायें, गजल, शायरी आदि लिखे तथा गाये हैं। भक्तजन उनकी महिमा में आरती, भजन, श्लोक आदि गाते, माला जपते और उनका ईश्वर तक पहुँचने का प्रयास आज भी जारी है।

हम सभी चाहे किसी भी धर्म के हों, ईश्वर से बहुत प्रेम करते हैं। इसीलिए मेहनत करके, पैसा खर्च करके मंदिर, मस्जिद, गिरजाघर, गुरुद्वारा बनाते हैं। इतना सब करने के पीछे हमारा लक्ष्य यही होता है कि इनके माध्यम से जीते जी ईश्वर को पाएँ, नहीं तो शरीर छोड़ने के बाद परमात्मा के पास अवश्य पहुँच जाएँ।

ईश्वर तक पहुँचने से पहले यह जानना सर्वाधिक आवश्यक है कि ईश्वर कौन है, कहाँ रहते हैं (निवास स्थान) तथा ईश्वर तक पहुँचने वाला कौन अर्थात् अपना भी सत्य परिचय। अपना व ईश्वर का सत्य परिचय जाने बिगर ईश्वर तक पहुँचना मुश्किल ही नहीं, नामुमकिन है चाहे राह कोई भी हो। आज तक जितने भी लोगों ने ईश्वर तक पहुँचने की राहें बताई हैं, वे सभी एक-दूसरे के विरुद्ध हैं। साधु-संन्यासियों का मानना है कि जप-तप-दान-पुण्य करने से ईश्वर तक पहुँच सकते हैं। कर्म सिद्धांत वालों का मानना है कि कर्म ही पूजा है, नेक कर्म करने पर ईश्वर तक पहुँच सकते हैं। भक्ति भावना में डूबे भक्तों का मानना है, ईश्वर सर्वव्यापी है, जिधर देखूँ तू ही तू नजर आते हो। सत्यवादी सिद्धांत वालों का मानना है, ईश्वर सत्य है, सत्य की नाव पर चलने से पार हो जायेंगे। प्रकृति प्रेमी, प्रकृति को ही ईश्वर मानते हैं। अनेकानेक मत होने के कारण लोग मूँझ गये हैं और यही मानना शुरू कर दिया है कि किसी भी राह पर चलकर ईश्वर तक पहुँचा जा सकता है, हर राह उन तक पहुँचती है।

अंग्रेजी में एक कथन है All roads lead to ROME अर्थात् 'सब रास्ते रोम जाते हैं।' इस कथन का भावार्थ है, मंजिल एक, राह अनेक। इस कथन को लोगों ने ईश्वर तक पहुँचने का कथन भी मान लिया है। उदाहरण के तौर पर अगर एक व्यक्ति को दिल्ली जाना

होता है तो वह किसी भी माध्यम से, चाहे बस से, रेलगाड़ी से वा हवाईजहाज से जा सकता है क्योंकि उसे दिल्ली के बारे में पूरी जानकारी है जैसे दिशा, रूट, गाईड इत्यादि। इसी दृष्टांत को अगर ईश्वर तक पहुँचने से जोड़ें तो सवाल उठता है कि क्या हम ईश्वर को इतना स्पष्ट रीति से जानते हैं जितना कि दिल्ली के बारे में जानते हैं? नहीं ना। ईश्वर तक पहुँचने का नक्शा अभी तक कोई भी त्रूटिरहित बना ही नहीं पाया, इससे परमात्मा तक पहुँचना तो दूर और ही दूरियाँ बढ़ गई हैं। अगर उन तक पहुँचना सम्भव होता तो आज जनसंख्या में इतनी वृद्धि ही नहीं होती। इससे तो यही लग रहा है कि उनके पास कोई आज तक पहुँचा ही नहीं, सभी जन्म-मरण का चक्र यहीं लगा रहे हैं। श्रीमद्भगवद् गीता में भगवान का वायदा है –

यदा यदाहि धर्मस्य ग्लानिर्भवति भारत :।
अभ्युत्थानमधर्मस्य तदात्मानं सृजाम्यहं ।।

अर्थात् जब-जब सृष्टि पर धर्म की ग्लानि होती है, अधर्म की वृद्धि होती है तब मैं अवतरित होता हूँ। परमात्मा अपना परिचय स्वयं इस धरती पर आकर देते हैं इसलिए उनको स्वयंभू तथा खुदा (खुद + आ) भी कहते हैं। वे सत्य धर्म की स्थापना करते हैं। अगर मनुष्यों द्वारा बताई गई राहों पर चलकर ईश्वर के पास पहुँचना सम्भव होता तो फिर ईश्वर को इस धरा पर आने की क्या आवश्यकता है। इससे यही निष्कर्ष निकलता है कि कोई भी देवी-देवता, गुरु-गोसाईं, धर्मस्थापक या मनुष्य, ईश्वर तक पहुँचने का रास्ता बता नहीं सकता। अब तक जितनी भी राहें बताई गई, वे राहें ईश्वर तक नहीं पहुँचती। इसी कारण दिन-प्रतिदिन अधर्म-पापाचार, भ्रष्टाचार बढ़ता ही जा रहा है।

ईश्वर की राह पर चलने वाला कौन? शरीर या आत्मा? ईश्वर की राह पर चलने वाली है अजर, अमर, अविनाशी चैतन्य आत्मा। आत्मा ही सत्य की राह पर चलती है। आत्मा का मूल स्वभाव प्रेम, आनन्द, शक्ति, सुख, शान्ति, पवित्रता और ज्ञान है जबकि शरीर के भान से काम, क्रोध, लोभ, मोह, अहंकार की उत्पत्ति होती है।

अपने आपको आत्मा (सत्य) निश्चय कर और परमात्मा से अपना नाता जोड़ना, इसको राजयोग कहा जाता है और यही ईश्वर तक पहुँचने की सत्य राह है। यह तो सभी मानते हैं कि सत्य की ही जीत होती है। आपका एक कदम यदि सत्य की इस राह पर चले तो सारे विश्व का कल्याण हो सकता है और आपके खाते में पदम गुणा पुण्य जमा हो सकता है। ●●●

शराब लगाये गुहार

●●● ब्रह्माकुमार विनोद कुमार प्रजापति, गाजीपुर (उ.प्र.)

मत छुओ शराब हूँ, नशा नहीं नाश हूँ मैं।
मुझे पीने वालों का एक दिन सर्वनाश हूँ मैं।।
मत छुओ शराब हूँ मैं---------

ना पीना मुझे, मेरे अन्दर जहरीली चीज समाई है,
मुझे पी-पीकर ना जाने कितनों ने जान गँवाई है,
सदा दूर रहो मुझसे, इसी में तेरी भलाई है।।

भाग्यवान बड़े हो तुम, जो मानव देह पाई है,
भूल नहीं, बहनों के रक्षासूत्र से बंधी तेरी कलाई है,
सदा दूर रहो मुझसे, इसी में तेरी भलाई है।।

गर्भस्थ अनाथों ने रो-रोकर मुझसे गुहार लगाई है,
विष होकर भी मैंने अपनी ममता, देख, जगाई है,
जरा सोच, कितनी मेहनत से आई पाई-पाई है,
सदा दूर रहो मुझसे, इसी में तेरी भलाई है।।

इसकी लत के वश हो तूने सम्पत्ति सब गँवाई है।
देह नहीं तुम हो आत्मा, जीवन की यही सच्चाई है।।
नशा मुक्त हो विश्व हमारा इसी में शान समाई है।
सदा दूर रहो मुझसे, इसी में तेरी भलाई है।

मत छुओ शराब हूँ, नशा नहीं नाश हूँ मैं।।

नारी नर्क का द्वार नहीं, काम विकार नर्क का द्वार है

●●● ब्रह्माकुमार शोभाराम सिंह बैस, दैवीपुर, सतना (म. प्र.)

यदि गम्भीरता से सोचा जाये तो काम विकार एक तेज विष है। जैसे विष से मनुष्य की मृत्यु हो जाती है, वैसे ही काम-वासना भी उसकी शारीरिक शक्तियों को क्षीण कर, उसके शरीर को निचोड़ कर, तेजी से उसे बुढ़ापे और मृत्यु के मुख में ले जाती है। विष का सेवन करने वाला मनुष्य तो बच भी सकता है लेकिन काम रूपी विष का सेवन करने वाला नहीं बच सकता। अत: इस विकार के अधीन होकर विकर्म करना ऐसे ही है जैसे विष खाकर आत्महत्या करना अर्थात् अपने अनमोल जीवन को मिट्टी में मिलाना। यह तो बिना आई मौत मरना है।

नरक के तीन द्वार

श्रीमद् भगवद्गीता में कहा गया है: --

त्रिविधं नरकस्येदं द्वारं नाशनमात्मन:।
काम: क्रोधस्तथा लोभस्तस्मादेतत्त्रयं त्यजेत्

अर्थात् काम, क्रोध तथा लोभ ये आत्मनाश के त्रिविध नरक के दरवाजे हैं इसलिए इन तीनों का त्याग कर देना चाहिए। काम विकार मनुष्य को नर्क में ले जाता है, इस प्रकार का वर्णन यादगार शास्त्र रामायण में भी आया है। कवि कहता है

काम, क्रोध, मद, लोभ सब नाथ नरक के पंथ।
सब परिहरि रघुवीरहि भजहु भजहिं जेहि संत

अर्थात् हे नाथ, काम, क्रोध, मद और लोभ, ये सब नर्क के रास्ते हैं। इन सब को छोड़कर भगवान का भजन कीजिए, जिन्हें संत भजते हैं। आदि शंकराचार्य ने नारी को नर्क का द्वार कहा परन्तु श्रीरामकृष्ण परमहंस जी ने अपनी पत्नी व सभी नारियों को माता की दृष्टि से देखा। शंकराचार्य भी सभी नारियों को माता की दृष्टि से देखता तो इतिहास कुछ और होता, नारी जाति कलंकित न होती। यदि किसी के घर में अकिचार धन-सम्पति हो, घर में रहने वाले पुरुष पढ़े-लिखे प्रकान्ड विद्वान हों लेकिन घर में एक भी नारी न हो तो वह सूना-सूना लगता है। सब कुछ होते हुए भी लगता है कि इस घर में कुछ भी नहीं है। प्रकाश होते हुए भी अंधकार दिखाई देता है। ऐसा क्यों होता है? क्योंकि नारी लक्ष्मी का स्वरूप होती है इसलिए नारी को गृहलक्ष्मी कहा जाता है। लक्ष्मी स्वयं प्रकाशमान होती है। जहाँ लक्ष्मी होती है वहाँ सब कुछ प्रकाशमान रहता है।

नारी है परिवार की रीढ़

नारी परिवार की रीढ़ है। जैसे पूरा शरीर रीढ़ की हड्डी पर आधारित रहता है, वैसे ही पूरा परिवार नारी पर आधारित रहता है। जैसे शरीर की रीढ़ टूट जाने से शरीर अस्थिर हो जाता है, वैसे ही नारी के न होने से गृहस्थी अस्थिर हो जाती है। यदि किसी की पत्नी मर जाती है तो वह अपना घर चलाने के लिए दूसरा विवाह कर लेता है। यदि दूसरी पत्नी भी मर जाती है तो पहली और दूसरी पत्नी के बच्चों की परवाह न कर वह तीसरा विवाह कर लेता है परन्तु यदि किसी पत्नी का पति मर जाता है तो वह दूसरा विवाह नहीं करती है। वह किसी भी प्रकार से अपना जीवन-यापन करती है और अपने बाल-बच्चों का पालन-पोषण करती है। नारी ममता की मूर्ति है और शक्ति भी है। गृहस्थ में नारी जितनी सेवा पुरुष की करती है, पुरुष उतनी सेवा नारी की नहीं कर पाता इसलिए नारी को सुख-शान्ति की जननी कहा गया है।

नर-नारी एक दूसरे के पूरक हैं

नर और नारी, गृहस्थ रूपी गाड़ी के दो पहिए हैं। इस गाड़ी को सुचारू रूप से चलाने के लिए दोनों पहियों का स्वस्थ और सन्तुलित होना जरूरी है। ये दोनों एक-दूसरे के पूरक हैं। इन दोनों के शरीरों की रचना प्रकृति के

एक समान तत्वों द्वारा की गई है। जैसे नर की आत्मा होती है वैसे ही नारी की भी आत्मा होती है। आत्माएं अपने गुणों और कर्मों के अनुसार नर अथवा नारी का शरीर धारण कर इस सृष्टि रंग-मंच पर अपना-अपना पार्ट बजाती हैं। जो इस जन्म में नर है, वह दूसरे जन्म में नारी होती है और जो इस जन्म में नारी है, वह दूसरे जन्म में नर होता है। यदि कोई दो जन्म नर होता है तो वह तीसरे जन्म में नारी अवश्य होती है। इसी प्रकार, यदि कोई दो जन्म नारी होती है तो वह तीसरे जन्म में नर अवश्य होता है।

कलियुग में काम विकार कर देता है बेहाल

सृष्टि के आदि में अर्थात् सतयुग-त्रेतायुग में आत्माएँ सतोप्रधान और सम्पूर्ण निर्विकारी होती हैं। संतान योगबल से पैदा होती है। सृष्टि के मध्यकाल अर्थात् द्वापरयुग में आत्माएँ रजोप्रधान होती हैं और विकारों की प्रवेशता हो जाने के कारण संतान भोगबल यानी काम विकार से पैदा होती है। सृष्टि के अंत में (कलियुग में) आत्माएँ तमोप्रधान हो जाती हैं और विकार (काम, क्रोध, लोभ, मोह, अहंकार) विकराल रूप धारण कर लेते हैं। काम विकार मनुष्य को इतना बेहाल कर देता है कि वह भयउ (छोटे भाई की पत्नी), बहू (पुत्र की पत्नी), बहन, बेटी किसी को न मानकर सबके साथ अत्याचार करने लगता है। रामायण में लिखा है –

कलिकाल विहाल किए मनुजा।
नाहिं मानत कोउ अनुजा तनुजा।

ऐसे लोग पाप के भागी बनते हैं और नरकगामी होते हैं। इसलिए कहा गया है कि नारी नर्क का द्वार नहीं, काम विकार नर्क का द्वार है। जैसे नर अपने शरीर का मालिक होता है वैसे ही नारी भी अपने शरीर की मालिक होती है। यदि नारी न चाहे तो नर उसके शरीर का उपभोग नहीं कर सकता। यदि वह जबरदस्ती करता है तो वह भी बलात्कार की श्रेणी में आता है और वह जघन्य पाप का भागी बनता है, नारकीय यातनाएँ भोगता है।

पशु-पंछी से भी गया-गुजरा हो गया मानव

मनुष्य सभी प्राणियों से श्रेष्ठ है। वह अपना हित-अनहित जानता है। अपना हित-अनहित पशु-पक्षी भी जानते हैं। रामायण में लिखा है,

हित अनहित पशु-पच्छिउ जाना।
मानुष तनु गनु ग्यान निधाना।।

अर्थात् अपना हित-अनहित तो पशु-पंछी भी जानते हैं, मनुष्य तो उनसे अधिक जानता है। लेकिन विडम्बना यह है कि वह जो जानता है, उसे आचरण में नहीं लाता। पशु-पंछी भी ऋतुचर्या या ऋतुकाल जानते हैं, अपनी मर्यादा में रहते हैं। लेकिन आज का मनुष्य पशु-पंछी से भी अधिक गया-गुजरा है। जब वह काम के वशीभूत होता है तब वह दिन-रात, तिथि, त्योहार, ऋतु, मान, मर्यादा कुछ नहीं मानता। वह कामान्ध होकर नारी के ऊपर हमला कर काम कटारी चलाता है। इसमें नारी का क्या दोष? वह विवश होकर अपवित्र होती है। ऐसा मनुष्य पाप का भागी बनता है और नरकगामी होता है जहां उसकी दुर्गति होती है।

अमृत के बदले विष

भगवान कहते हैं, कई नारियाँ विष के लिए बहुत मार खाती हैं। जो मनुष्य विष के लिए नारियों को मारते हैं, प्रताड़ित करते हैं, दु:ख, तकलीफ देते हैं, उनकी पवित्रता भंग करने की कोशिश करते हैं, वे पाप के भागी बनते हैं। रामायण में लिखा है,

नर तन सम नहिं कवनिउ देही।
जीव चराचर याचत जेही।।
नर तन पाई विषय मन देही।
पलटि सुधा ते सठ विष लेही।।

अर्थात् मनुष्य योनि के समान कोई दूसरी योनि नहीं है जिसकी याचना जगत के सभी प्राणी करते हैं। लेकिन जो अनमोल मनुष्य शरीर पाकर विषय-भोग में अपना मन लगाता है वह मूर्ख अमृत के बदले विष लेता है। मनुष्य विषय भोग के लिए जितना हड्डी-चमड़ी के विनाशी शरीर से प्रेम करता है, उसमें अपना मन लगाता है, उतना यादि वह अविनाशी परमात्मा से प्रेम करे, उनमें मन लगाए, उनको याद करे तो उसकी सद्गति हो जाये।

आत्मिक दृष्टि से देखो तो काम का कामतमाम

प्रश्न उठता है कि मनुष्य को काम विकार से मुक्ति कैसे मिले? इसके लिए भगवान कहते हैं कि बच्चे, अपने को आत्मा समझो और दूसरे को भी आत्मा समझो, भाई-भाई की दृष्टि से देखो तो क्रिमिनल ख्यालात बिल्कुल निकल जायेंगे। जब किसी से बात करो तो यह समझो कि मैं आत्मा, इस आत्मा भाई से बात करता हूँ। सबको आत्मा समझो और आत्मिक दृष्टि से देखो तो काम विकार की उत्पत्ति नहीं होगी।

जब मनुष्य स्वयं को भूल जाता है कि मैं आत्मा हूँ, अपने को देह समझता है, तो उसमें देह अभिमान उत्पन्न होता है कि मैं नर हूँ, यह नारी है। जब वह नारी को दैहिक दृष्टि से देखता है तो उसकी देह में आकर्षित हो जाता है जिससे मन विचलित हो जाता है, कर्मेन्द्रियां चलायमान हो जाती हैं और काम विकार की उत्पत्ति होती है। लेकिन जब उसे यह मालूम हो जाता है कि मैं देह नहीं, देही हूँ और यह देह (शरीर) मुझ देही (आत्मा) के कर्म करने का साधन है, तब काम विकार की उत्पत्ति नहीं होती और ब्रह्मचर्य या पवित्रता का पालन अपने आप हो जाता है।

योगी बनो, पवित्र बनो

काम विकार की उत्पत्ति में कुछ नारियों का भी दोष है। भगवान कहते हैं, कई नारियां विकार के लिए बहुत हंगामा करती हैं। ऐसी नारियों को सूर्पणखा कहा जाता है। सूर्पणखा माना विष के लिए अपने शरीर को सजाकर सुन्दर बनाने वाली नारी। कई नारियाँ बहुत फैशन करती हैं। वे अपने शरीरों को खूब सजाती हैं। उनको देखकर पुरुष मोहित हो जाते हैं जिससे काम विकार की उत्पत्ति होती है। रामायण में लिखा है, कुपथ (सजी हुई सुन्दर नारी) को देखकर मुनियों के हृदय में भी काम का बीज अंकुरित हो जाता है तो साधारण पुरुषों में काम विकार उत्पन्न होना स्वाभाविक ही है। जितना वे नारियां अपने हड्डी-मांस के ढांचे को सजाती हैं, प्लास्टिक रूपी चमड़ी को सुन्दर बनाती हैं, उतना यदि वे ढांचे को चलाने वाली चेतन शक्ति आत्मा को सजाएं, सुन्दर बनाएं तो उनका उद्धार हो जाए। भगवान कहते हैं, बच्चे, किसी के रंग-रूप में मत फंसो। योगी बनो, पवित्र बनो। पवित्रता ही सुख-शान्ति की जननी है। यदि तुम पवित्र बनोगे तो मैं तुमको अपनी पलकों पर बिठाकर बड़े आराम से अपने परमधाम ले जाऊँगा। ●●●

नारी की महिमा बड़ी है

●●● ब्रह्माकुमार राजेन्द्र भाई, एटा (उ.प्र.)

हर युग में नारी की महिमा बड़ी है।
जिस घर में आज नारी का सम्मान सब करते हैं।
देवता उसी घर में आकर निवास करते हैं।।
और जहाँ नारी का सम्मान नहीं होता है।
शान्ति-सुख-चैन बिन दिन-रात इन्सान रोता है।।
सम्पूर्णता को प्राप्त कर बोली बुलंद बोलेगी।
नारी ही तो सबसे पहले स्वर्ग का गेट खोलेगी।।
नारी के हाथ जादू की छड़ी है।
हर युग में नारी की महिमा बड़ी है।।

योग की शक्ति से वह सृष्टि को बचा सकती है।
आवेश में संसार को उंगली पर नचा सकती है।।
परमात्मा ने ज्ञान-कलश नारी को ही सौंपा है।
नारी ही ला सकती है तूफान में भी तोफा है।।
स्वमान तीव्र शक्ति से माया भी भाग जायेगी।
हर मुसीबत में खड़ी नारी ही नजर आयेगी।।
सतयुग पर नारी की नजर अड़ी है।
हर युग में नारी की महिमा बड़ी है।।

नारायणी नारी ने किया ज्ञान का उजाला है।
इसीलिए तो आज तक नारी का बोलबाला है।।
सम्पूर्ण बनी नारियों को कौन रोक पायेगा।
प्रकृति को छोड़ो, धर्मराज भी सर झुकायेगा।।
नारी शक्ति जाग कर सबको सुधार सकती है।
सहज में ही इस धरा पर स्वर्ग उतार सकती है।।
माया के आगे सीना ताने खड़ी है।
हर युग में नारी की महिमा बड़ी है।।

काफी पुराने शास्त्र भी देते यही पैगाम हैं।
सतयुग से लेकर आज तक नारी का पहले नाम है।।
रानी या महारानी बन जग को संभाल सकती है।
कलियुग के किचड़े को जड़ से उखाड़ सकती है।।
सति अनुसूईया को देवों ने आजमाया था।
ललना बना के उन्हें पालना झुलाया था।।
श्रीमत से शिव के दिलतख्त पर चढ़ी है।
हर युग में नारी की महिमा बड़ी है।।

सब चिन्ताएँ समाप्त हो गई

ब्रह्माकुमार सतपाल सिंह पुजारी, कारागार नासिक (महाराष्ट्र)

मैं 18 वर्ष की आयु से कमाई करने लग गया था और बहुत देह-अभिमान में रहता था। घरवालों ने प्रारम्भ में मेरी बहुत मदद की। रुपये जमा होने के बाद मैंने एक चिकन सेंटर खोला। उससे मुझे अच्छी कमाई हो जाती थी। पाप की कमाई कितनी भी ज्यादा हो, पाप में ही लगती है। मेरे साथ भी ऐसा ही हुआ। ज्यादा कमाई होने की वजह से मैं गलत रास्ते पर चल पड़ा। गांजा, शराब, अफीम आदि का सेवन करने लगा और इनके अधीन हो गया। मेरा ध्यान काम में कम और नशे में ज्यादा रहने लगा। फिर नशा करते-करते नशे के धंधे भी करने लग गया। नशे के कारोबार से मेरे पास बहुत पैसा आने लगा और मुझे पैसे से मोह हो गया। मैंने बहुत पैसा जमा कर लिया। फिर 19 मार्च, 2011 को मेरी दुकान पर छापा पड़ा। मुझे पकड़ लिया गया और जेल में बंद कर दिया गया। दस महीने के बाद इस केस में मुझे सजा हो गई और मैं जेल आ गया।

जेल में बहुत तनाव में रहने लगा। घरवालों की चिंता, माता-पिता की चिंता, पूरे परिवार की चिंता करने लगा, चिंता की वजह से मुझे उच्च रक्तदबाव (बी.पी.) हो गया। इससे मैं और ज्यादा तनाव में रहने लगा। मैं भगवान की भक्ति करता था लेकिन मन भक्ति में नहीं लगता था। एक दिन जेल में मेरे सर्कल के सुनील भाई और राहुल भाई से मैंने पूछा कि आप रोज सुबह कहाँ जाते हो? उन्होंने बताया, हम प्रजापिता ब्रह्माकुमारी ईश्वरीय विश्व विद्यालय की ओर से खुले ज्ञान-केन्द्र में जाते हैं। मैंने पूछा, वहाँ क्या करते हैं? उन्होंने बताया, वहाँ पढ़ाया जाता है कि हम एक दिव्य चमकता हुआ सितारा हैं, आत्मा हैं। रोज मुरली सुनाई जाती है। चार-पाँच दिन के बाद मुझे अचानक महसूस हुआ कि मैं भी इन भाइयों के साथ पढ़ने जाऊँ। फिर मैंने जाना शुरू किया। पहले दिन मुझे आत्मा का पाठ पढ़ाया गया। उस दिन पता लगा कि मैं एक चैतन्य महान आत्मा हूँ। ज्ञान में आने से पहले मैंने अपनी सभी कर्मेन्द्रियों से बहुत पाप किये थे। उनकी स्मृति जेल में मुझे बहुत तकलीफ देती थी लेकिन जबसे रोज मुरली सुनने लगा और राजयोग का अभ्यास करने लगा तबसे बहुत शान्ति मिलने लगी है। मेरी सब चिन्ताएँ समाप्त हो गई हैं। अब शरीर को चलाने वाली आत्मा और परमात्मा पिता के सत्य ज्ञान के आधार से चिंता करने वाली मेरी बुद्धि एकदम शांत हो गयी है।

मैं पहले जाति का बहुत भेदभाव करता था, मुझे अपने 'सिख धर्म' पर बहुत गर्व था लेकिन जबसे ज्ञान मार्ग में आया हूँ, मेरा गर्व खत्म हो गया है। अब मैं सर्व मनुष्य जाति को अपना भाई मानता हूँ। किसी से भी गलत बातें या गलत व्यवहार नहीं करता हूँ। मैं शिवबाबा की सन्तान हूँ, यह कहते हुए मुझे बहुत गर्व होता है। मेरी बीमारी कम हो गयी है, दिनचर्या बहुत अच्छी हो गयी है। मैं शिवबाबा से रोज बातें करता हूँ। मैं उनके जैसा बनने की कोशिश कर रहा हूँ। रोज अमृतवेले उन्हें 5.30 बजे तक याद करता हूँ। संसार की सभी जेलों में बंदी भाइयों और बहनों को सकाश देता हूँ कि ये सभी आत्मायें जल्दी से जल्दी छूट जाएँ और शिवबाबा के बन जाएँ, इन सबकी बुद्धि स्वच्छ हो जाए, सबका बेड़ा पार हो जाए। मैं भोजन को भोग लगाकर खाता हूँ। मैंने यह संकल्प किया है कि मैं पूरे संसार की सेवा करूँगा, श्रीमत पर चलूँगा और शिवबाबा से वर्सा लेने का पुरुषार्थ करता रहूँगा। मुझे पता लग गया है कि संसार एक विचित्र ड्रामा है। शिवबाबा की याद से हमारे विकर्म विनाश होते हैं, हम पाँच विकारों की बीमारी से बच जाते हैं। अब हमको तमोप्रधान से सतोप्रधान जरूर बनना है। अब मौत का डर खत्म हो गया है।

1.उदयपुर- 'म्हारो राजस्थान, समृद्ध राजस्थान' अभियान कार्यक्रम के समापन समारोह में मंचासीन हैं ब्र.कु.रीटा बहन, सेवानिवृत्त बैंक मैनेजर भ्राता प्रदीप शेट्टी, ब्र.कु.पूनम बहन, सोजतिया ज्वेलर्स ऑनर भ्राता रंजीत सिंह सोजतिया, मेयर भ्राता चंद्रसिंह कोठारी, ब्र.कु.जीतू भाई तथा अन्य। **2.मौड़मण्डी (भटिण्डा)-** श्री सत्यनारायणदेव की कथा का शुभारम्भ करते हुए ब्र.कु.उर्मिला बहन, ब्र.कु.नीलम बहन, ब्र.कु.शिवानी बहन तथा अन्य गणमान्यजन। **3.झालावाड़-** विश्व हृदय दिवस के अवसर पर आयोजित कार्यक्रम का शुभारम्भ करते हुए डॉ.अशोक नागर – कैंसर रोग विशेषज्ञ, डॉ.मन्जू अग्रवाल – स्त्री रोग विशेषज्ञ, नगर परिषद् अध्यक्ष भ्राता मनीष शुक्ला, धाविका बहन पूजा तेजी, पत्रकार भ्राता जितेन्द्र तथा ब्र.कु.मीना बहन। **4.भीलवाड़ा-** 'म्हारो राजस्थान, समृद्ध राजस्थान' कार्यक्रम का शुभारम्भ करते हुए जिला परिषद् के सी.ई.ओ.भ्राता गोपाल राम बिरडा, ब्र.कु.इंद्रा बहन, डॉ.वैशाली बहन, डॉ.के.सी.पवार तथा अन्य। **5.झालावाड़ (झालरापाटन)-** 'म्हारो राजस्थान, समृद्ध राजस्थान' अभियान के तहत सफाई करते हुए वीरेन्द्र भाई, हेमसिंह भाई, प्रकाश भाई, महावीर भाई, ब्र.कु.मीना बहन, नगरपालिका आयुक्त भ्राता महावीर सिंह सिसोदिया तथा नगरपालिकाध्यक्ष भ्राता अनिल पोरवाल। **6.चौमहला (झालावाड़)-** पुलिस थाना परिसर में पौधारोपण करते हुए थाना प्रभारी भ्राता सुरजीत सिंह, हेड कॉस्टेबिल भ्राता अब्दुल सलीम, ब्र.कु.गीता बहन तथा अन्य। **7.बदनौर (भीलवाड़ा)-** पशु मेले में लगाई गई आध्यात्मिक चित्र प्रदर्शनी का उद्घाटन करते हुए ब्र.कु.सरला बहन, नगर काँग्रेस अध्यक्ष भ्राता चंपालाल चंदेल, यूथ काँग्रेस तहसील अध्यक्ष भाता अनिल शर्मा तथा अन्य। **8.जयपुर(राजापार्क)-** 'मेरा भारत, हरित भारत' अभियान के तहत वृक्षारोपण करते हुए ब्र.कु.नीलम बहन, ब्र.कु.पूजा बहन तथा राजकीय बालिका विद्यालय की टीचर्स व छात्रायें।

स्वयं परमात्मा ने कैंसर को क्योर किया

ब्रह्माकुमार मदनलाल शर्मा, जयपुर

(भ्राता मदनलाल शर्मा जी, प्यारे शिवबाबा व दैवी परिवार की दुआओं के बल से, भारत के कई स्थानों में फैले विस्तृत व्यापार को इशारे से सम्भालने में समर्थ हैं। तनावमुक्त व्यापार प्रबन्धन के आप सजीव नमूने हैं। सन् 1965 में कोलकाता में टिबरेवाल धर्मशाला में प्रजापिता ब्रह्माकुमारी ईश्वरीय विश्व विद्यालय की ओर से आध्यात्मिक चित्र प्रदर्शनी आयोजित की गई जिसे देख आप ईश्वरीय ज्ञान में आ गए। प्यारे ब्रह्मा बाबा से और उनके तन में विराजमान प्यारे शिवबाबा से आपने अनेकों बार मिलन मनाया और वरदान पाए। आपका अनुभव कहता है, 'मैं-पन' से बचने का जितना ज्यादा प्रयास किया है, उतनी ही ज्यादा सफलता सामने आई है। अब पढ़िए कर्मभोग में भी कर्मयोग का उनका अनुभव...)

सन् 2016 में माउण्ट आबू की मीटिंग में शामिल होने के बाद जब मैं वापस आया, तो शरीर बिल्कुल ठीक था। लेकिन, कुछ ही समय के बाद कुछ शारीरिक टैस्ट कराये तो डॉक्टर ने कहा कि आपको कैंसर है और बीमारी की लास्ट स्टेज है। यह सुनकर मैं ना तो विचलित हुआ और ना ही मुझे कोई चिंता हुई। मन में आया कि जो होना था सो हो गया। तीन बार ऑपरेशन हुए। मेरे बच्चों ने तो कहा कि आप बहुत लेट हो गये हो परन्तु मुझे मरने की भी चिंता नहीं थी। कैंसर के दौरान भी, अपनी दिनचर्या के अनुरूप मैं राजयोग मेडिटेशन की क्लास कभी मिस नहीं करता था। मेरी छः कीमोथैरेपी हुई। इसी हालत में एक साल बाद मुझे चिकनगुनिया हो गया जिससे मेरा चलना-फिरना बिल्कुल बंद-सा ही हो गया। फिर भी कमरे में अकेला होने पर भी मैं अपना कार्य स्वयं ही कर लेता था। मैंने व्यायाम और योगासन करना भी नहीं छोड़ा। एक दिन शान्तिवन के फिजियोथैरेपिस्ट डॉ.श्याम भाई ने पूछा, आप क्या कर रहे हैं? मैंने कहा, बीमार हूँ। उन्होंने कहा, आप गाजर का ज्यूस पीओ, रागी की रोटी खाओ और हरी सब्जी खाओ, यह जरूरी है, इससे आराम मिलेगा। मुझे तो ऐसा लगा कि जैसे शिवबाबा ने ही इनको कहा हो कि मैं ऐसी दवा लूँ। मैं महसूस करता हूँ कि शिव बाबा ने मेरा पग-पग पर साथ दिया है। हर समस्या बाबा को बताता रहा और जैसे बाबा मुझे साकार में गाइड करते थे, वैसे अभी भी कर रहे हैं।

राजयोग मेडिटेशन और व्यायाम अभ्यास को बरकरार रखने के कारण ही आज मैं बिल्कुल ठीक हूँ। मैं तो समझता हूँ कि वो बीमारी थी ही नहीं बल्कि मेरा स्वास्थ्य तो परमात्मा ने पहले से भी अधिक ठीक कर दिया है। बाबा मुझे 88 की उम्र में भी चला रहा है। उमंग-उत्साह कभी कम होता ही नहीं। हमेशा खुशी रहती है। उठते-बैठते, सोते-जागते बाबा को धन्यवाद देता हूँ। बाबा कहते हैं, याद की शक्ति बहुत बड़ा काम करती है। डॉक्टर कहते हैं, हमारे बस की बात नहीं थी, ये तो ऊपर वाले की कमाल है। सभी हैरान होते हैं कि आप एकदम ठीक कैसे हो गये। कोई कहता है कि आपकी विल पावर थी जिससे आप ठीक हो गये। मैं कहता हूँ कि ये तो बाबा की कमाल है। इच्छा मात्रम् अविद्या, अब ऐसी मेरी स्थिति है। एक बार बाबा ने चिट्ठी लिखी मुझे और दूसरे ही दिन मैं आ गया बाबा के पास। बाबा ने कहा था, बच्चा दौड़ कर आयेगा। ये बाबा को नशा था और मुझको बाबा का नशा था। अभी भी मुझे यही लगता है कि जैसे निराकार और साकार दोनों बाबा मेरे साथ हैं।

सुप्रीम सर्जन ने किया सफल आपरेशन

ब्रह्माकुमार प्रेम कुमार, अबोहर (पंजाब)

सन् 2014 की बात है, अचानक मेरी बाईं बाजू में दर्द हो गया। फिजीयोथरैपी से उपचार करवाया लेकिन कोई फायदा नहीं हुआ। मेरी बेटी उस समय बीकानेर में एम.डी.मैडिसन की पढ़ाई कर रही थी। उसने मुझे बीकानेर बुलाया और वहाँ एन्जीयोग्राफी करवाने पर पता चला कि हृदय की तीन आर्टरीज में ब्लॉकेज हैं। एक में 70 प्रतिशत, दूसरी में 50 प्रतिशत और तीसरी में 100 प्रतिशत हैं। बीकानेर में डॉक्टरों ने दवाई शुरू कर दी और एन्जीयोप्लास्टी करवाने की सलाह दी।

पीस ऑफ माइंड चैनल पर सुना अनुभव

बाबा का कमाल देखिए, एक दिन मैंने टी.वी.में पीस आफ माइंड चैनल लगाया तो उसमें एक कार्यक्रम में चण्डीगढ़ के अग्निहोत्री भाई अपना अनुभव सुना रहे थे कि मेरी आर्टरीज ब्लॉक हो गईं, उनकी बाईपास सर्जरी भी नहीं हो सकती थी। मैंने माउंट आबू में डॉ.सतीश गुप्ता जी द्वारा चलाये गए कैड (CAD) कार्यक्रम में जीवनशैली परिवर्तन, खान-पान की परहेज, सैर का तरीका, राजयोग का अभ्यास आदि धारणाओं का अनुसरण किया है और अब मैं पूर्णत: स्वस्थ हूँ। यह अनुभव सुनकर मैंने राहत महसूस की और मन ही मन इसी कार्यक्रम में जाने की ठान ली। जब बेटी मुझे पी.जी.आई., चण्डीगढ़ में एन्जीयोप्लास्टी के लिए ले गई तो मैं वहाँ अग्निहोत्री भाई जी से मिला और मैंने एन्जीयोप्लास्टी न करवा कर, कैड कार्यक्रम में शामिल होने के लिए बिटिया को मना लिया।

परमपिता मिले ब्रह्मा बाबा के सूक्ष्म शरीर में

निमित्त बहनों के सहयोग से ब्रह्माकुमारीज, माउंट आबू में मैंने अपनी रिपोर्ट डॉ.सतीश गुप्ता जी को भेज दी। बाबा की असीम कृपा से अप्रैल, 2015 में कार्यक्रम में शामिल होने की मंजूरी मुझे मिल गई। डॉ.सतीश गुप्ता जी ने दिल की बीमारी होने के कारण और निवारण के वैज्ञानिक और आध्यात्मिक तरीके बताए। कार्यक्रम में दिल के मरीजों को मरीज न कहकर दिलवाले कह कर पुकारा जाता है। मनोबल बढ़ा कर, दवा और राजयोग के द्वारा उनका उपचार किया जाता है। कार्यक्रम के बीच में बड़े-बड़े तपस्वी भाई-बहनें एवं दादियाँ भी राजयोग का अभ्यास करवाने आए। आत्मा के आपरेशन के लिए एक स्पेशल दिन रखा गया। जैसे ही मैं योग में बैठा, मुझे आभास हुआ कि मैं ऊपर परमपिता परमात्मा के पास पहुँच गया हूँ और वहाँ परमपिता मुझे ब्रह्मा बाबा के सूक्ष्म शरीर में मिले। मैंने बाबा से कहा, 'बाबा, मेरा आज ही आपरेशन कर दो।' बाबा ने कहा, 'बच्चे, आपका आपरेशन थोड़े दिनों के बाद करेंगे।' जैसे छोटे बच्चे बार-बार आग्रह करते हैं, वैसे ही मैंने बाबा से कहा कि मुझे तो आज ही करवाना है। बाबा ने कहा, बच्चा जिद्द करता है तो आज ही कर देते हैं। बाबा ने एक सुनहरा हृदय डाल कर मेरे हृदय का आपरेशन कर दिया। फिर तो मेरी खुशी का पारावार न रहा। योग के बाद मुझे बहुत अच्छा अनुभव होने लगा। जब डॉक्टर साहब हमको पिकनिक पर ले गए तब सबको यह अनुभव बताया गया।

इस कार्यक्रम का साल भर अनुसरण करने के बाद बेटी मुझे पुनः चण्डीगढ़, पी.जी.आई.में ले गई। वहाँ चेकिंग के बाद आश्चर्यजनक परिणाम प्राप्त हुए। मेरी आर्टरीज खुल चुकी हैं।

मैं परमपिता परमात्मा, सेवाकेन्द्र की निमित्त बहनें, डॉ.सतीश गुप्ता, श्रीमती बाला बहन, यश भाई एवं कैड कार्यक्रम की पूरी टीम का कोटि-कोटि धन्यवादी हूँ। साथ-साथ शुक्रगुजार हूँ उन महान तपस्वी दादियों और भाई-बहनों का जिन्होंने अपनी तपस्या के वायब्रेशन, दुआएँ और स्वस्थ होने का वरदान भी मुझे दिया। अब तो –

'ये दिल हर पल गाता रहता, उपकार तुम्हारा ओ बाबा,
बदली हमारी किस्मत, पाके प्यार तुम्हारा ओ बाबा।।' ●●●

जीवन बना निर्व्यसनी और खुशहाल

ब्रह्माकुमार कमल भाई, बहादुरगढ़ (हरियाणा)

मेरा जन्म सन् 1970 में बहादुरगढ़ में हुआ। पिताजी नेवी में उच्च अधिकारी थे। मैंने मैट्रिक तक पढ़ाई की उसके बाद टैक्सी खरीदी और उस पर ड्राइवर रखकर कमाई करने लगा। कुसंग में पड़कर मैं मात्र 17 वर्ष की आयु में सभी नशीले पदार्थों का आदी हो गया। शराब पीने की मात्रा बहुत ज्यादा बढ़ गई। शराब पीकर जब घर आता था तो बच्चे डर कर चारपाई और दरवाजों के पीछे छिप जाते थे। पत्नी परेशान रहती थी। आर्थिक स्थिति भी डाँवाँडोल थी। शरीर कमजोर हो गया था। खाना खाने का होश नहीं रहता था। मैं शराब छोड़ना चाहता था पर छूटती नहीं थी। आत्मा एकदम परवश हो गई थी।

गुरु के सहयोग से छूट गई शराब

एक बार मेरे एक होटल वाले मित्र ने कहा, भाई जी, शराब पीकर आपकी हालत मरने जैसी हो गई है, छोड़ क्यों नहीं देते? मैंने कहा, छूटती नहीं है, बहुत कोशिश की है छोड़ने की। उसने एक गुरु का नाम बताया और कहा, वहाँ चले जाओ, आपकी शराब छूट जाएगी। अगले दिन ही मैं परिवार सहित गुरुजी के पास चला गया। उसने मुझे गुरुमंत्र दिया और कहा, आज के बाद मत पीना। गुरु के प्रति भावना-वश मैंने 15 दिन शराब नहीं पी। घरवाले खुश हो गए परन्तु 15 दिन बाद मुझे लगा कि ये तो गधे जैसी जिंदगी हो गई, सुबह से शाम तक काम करो, शाम को खाना खाकर सो जाओ इसलिए दुबारा शराब पीने की कोशिश की परन्तु वह रिएक्शन कर गई और उसके बाद पीनी बन्द कर दी। गुरुजी से माफी भी मांग आया। कहा गया है, बुराई अनेक रूप धारण कर फिर-फिर आती है। एक दिन किसी दोस्त ने कहा, शराब का परहेज है, बीयर तो पी सकते हो। मैंने सोचा, बात तो ठीक है और बीयर पीना चालू कर दिया परन्तु कुछ दिन बाद वह भी रिएक्शन कर गई और उसे भी पूरी तरह छोड़ दिया। इस प्रकार मैं शराबमुक्त हो गया परन्तु बीड़ी-सिगरेट अभी भी पीता था।

गुरु के यहाँ नारा देते थे, नाम जपो और प्रेम करो। परन्तु मुझे प्रेम कहीं नजर नहीं आता था इसलिए मन पूर्ण सन्तुष्ट नहीं था, अभी भी भगवान की तलाश थी।

ईश्वरीय ज्ञान में निश्चय हुआ गहरा

एक बार व्यापारिक परेशानियों से बोझिल होकर मैं बार-बार टी.वी. के चैनल बदल रहा था, तभी एक चैनल पर ब्र.कु. शिवानी बहन का प्रवचन सुनने को मिला जिससे शान्ति की अनुभूति हुई। इसके बाद मैं उसी चैनल को रोज चलाकर शिवानी बहन के प्रवचन सुनने लगा। चैनल पर दिए गए फोन नं. से मुझे स्थानीय सेवाकेन्द्र का पता मिला और मैं बहादुरगढ़, अग्रवाल कालोनी सेवाकेन्द्र पर पहुँच गया। मैंने ब्र.कु. बहन को बताया कि व्यापार में किसी ने मेरा पैसा मार लिया है इसलिए मैं बहुत परेशान हूँ। बहन जी ने कहा, इसमें परेशान होने की आवश्यकता नहीं है, कर्मगति को समझने की आवश्यकता है। यदि आपने किसी जन्म में उसका मारा होगा तो हिसाब-किताब चुक्ता हो गया और अगर ऐसा नहीं है तो आपका पैसा, आपके पास आ जाएगा। सचमुच चार महीने बाद मेरा फँसा हुआ पैसा निकल आया और मेरा निश्चय भगवान में और उनके ज्ञान में और गहरा हो गया।

कर्मगति का हुआ ज्ञान

कुछ ही समय बाद पैसों के नशे में मैं भगवान को भूल गया और सेवाकेन्द्र पर जाना बन्द कर दिया। तभी घर में एक बहू ऐसी आ गई जिसने पारिवारिक एकता को खण्ड-खण्ड कर दिया। यह अशान्ति मुझे फिर से खींचकर सेवाकेन्द्र पर ले गई। शिवबाबा का बनकर पूर्ण निर्व्यसनी हो गया हूँ, बीड़ी-सिगरेट भी छूट गई हैं। स्वास्थ्य अच्छा हो गया है। अब पहले से ज्यादा काम करता हूँ और पहले से ज्यादा कमाई भी करता हूँ। पहले सुबह सात बजे उठता था, अब सुबह चार बजे उठ जाता हूँ। क्रोध काफी कम हो गया है, पूरा नहीं गया है। कर्मगति की समझ आ गई है इसलिए दुकान पर कोई पैसा भूल जाता है तो बुलाकर भी उसे लौटा देता हूँ। पहले सोचता था, भूल गया तो हम क्या करें, उसे रख लेते थे।

मन में जो असन्तुष्टि थी वह खत्म हो गई है। अब मन हमेशा प्रसन्न रहने लगा है। सारे बोझ बाबा को सौंपकर जीवन हल्का हो गया है।

1.जींद- कृषि सम्मेलन का उद्‌घाटन करते हुए ब्र.कु.सरला बहन, ब्र.कु.भोला, ब्र.कु.बाला शाह, विधायक डॉ.कृष्ण मिड्ढ़ा, डॉ.सुभाष तथा ब्र.कु.विजय बहन। **2.भटिण्डा-** श्रीसत्यनारायण देव की कथा कार्यक्रम में सम्बोधित करते हुए ब्र.कु.उर्मिला बहन। **3.कादमा-** ब्र.कु.वसुधा बहन को 'देशभक्त अवार्ड-2019' से सम्मानित करते हुए वाटरमैन भ्राता राजेन्द्र सिंह, जिला महाप्रबंधक नाबार्ड भ्राता सोहनलाल, कृषि विज्ञान केन्द्र के विशेषज्ञ डॉ.दहिया एवं अन्य। **4.पानीपत(ज्ञानमानसरोवर)-** किसान सशक्तिकरण सम्मेलन के उद्‌घाटन के बाद ईश्वरीय स्मृति में हैं ब्र.कु.मेहरचन्द भाई, ब्र.कु.भारतभूषण भाई, ब्र.कु.सरला बहन, मेहसाना, ब्र.कु.सरला बहन, पानीपत, भ्राता सुरेश दहिया तथा अन्य। **5.तोशाम-** यौगिक खेती व जल संरक्षण कार्यक्रम के बाद प्रकृति-सुरक्षा की प्रतिज्ञा लेते हुए ब्र.कु.सरला बहन, अखिल भारतीय किसान सभा के प्रधान मास्टर शेर सिंह, कृषि विज्ञान केन्द्र के डॉ.वेद प्रकाश लुहाच, बाबा जगन्नाथ तथा ब्र.कु.विजय भाई। **6.होडल-** 'पर्यावरण सुरक्षा' कार्यक्रम में उपस्थित हैं आर्मी रिटायर्ड चंदरभान भाई, ब्र.कु.ऊषा बहन, डॉ.जे.के.मित्तल, सर्राफा यूनियन प्रधान भ्राता कमल खन्ना तथा अन्य। **7.कौल (कुरुक्षेत्र)-** 'मेरा भारत स्वर्णिम भारत' अभियान कार्यक्रम का उद्‌घाटन करते हुए ब्र.कु.पूनम बहन, ब्र.कु.पुष्पा बहन, ब्र.कु.मधु बहन तथा सरपंच भ्राता श्यामसुंदर। **8.नालागढ़-** 'मेरा भारत, स्वर्णिम भारत' युवा यात्रा के कार्यक्रम में एस.डी.एम.भ्राता प्रशान्त देष्टा को ईश्वरीय सौगात देते हुए ब्र.कु.रजिन्द्र बहन तथा अन्य।

1.महम- 'जिन्दगी बने आसान' कार्यक्रम का उद्‌घाटन करते हुए ब्र.कु.सूर्य भाई, ब्र.कु.रूपेश भाई, ब्र.कु.गीता बहन, महन्त सतीश दास, डॉ.ओ.पी.चित्कारा, ब्र.कु.चेतना बहन तथा ब्र.कु.सुमन बहन। **2.डिडवाना-** विधायक भ्राता चेतन जी को ईश्वरीय सौगात देते हुए ब्र.कु.अनिता बहन, ब्र.कु.अविनाश भाई तथा ब्र.कु.रूपा बहन। **3.घरौंडा-** 'मेरा भारत, हरित भारत' अभियान के तहत वृक्षारोपण करते हुए विधायक भ्राता हरविन्दर कल्याण, ब्र.कु.रेणु बहन, डॉ.एस.के.शर्मा तथा अन्य। **4.कलायत-** विधायक भ्राता जयप्रकाश जी को ईश्वरीय सौगात देते हुए ब्र.कु.रेखा बहन। **5.डुंगरपुर-** महात्मा गांधी वरिष्ठ माध्यमिक कन्या विद्यालय में ईश्वरीय सन्देश देते हुए ब्र.कु.उर्मिला बहन। **6.कोटा-** केन्द्रीय जेल कारागार में व्यसन मुक्ति एवं पुनर्वास केन्द्र के उद्‌घाटन के पश्चात् डिविजनल जनरल पुलिस भ्राता एन.के.आर.रेड्डी को ईश्वरीय सौगात देते हुए ब्र.कु.उर्मिला बहन तथा ब्र.कु.ज्योति बहन। **7.करनाल (सेक्टर-7)-** आई.एम.ए.की सचिव बहन तेजींदर कौर खन्ना को ईश्वरीय सौगात देते हुए ब्र.कु.प्रेम बहन। **8.लुधियाना-** भ्राता प्रह्लाद मोदी (प्रधानमंत्री भ्राता नरेन्द्र मोदी के भाई जी) को ईश्वरीय सौगात देते हुए ब्र.कु.सरस्वती बहन।

गीत की एक लाइन बनी संजीवनी

●●● ब्रह्माकुमार वीर सिंह कठैत, देहरादून

यह मेरा अहो भाग्य है कि परमपिता परमात्मा शिव ने मुझ भटकते राही को सन्मार्ग दिखाया, अपनी शरण के लिए चुना और दिलतख्तनशीन किया। संशय और व्यर्थ संकल्पों के भंवरजाल में 9 वर्षों तक हिचकोले खाने के बाद बाबा ने 2019 में मुझे मधुबन आने का न्यौता दिया। बाप से मिलन मनाने के लिए युगल तथा अन्य अनेक भाई-बहनों के संग मधुबन की यात्रा के दौरान निमित्त बहनों की बहुत पालना प्राप्त हुई।

बाप के घर मौज ही मौज

शान्तिवन परिसर में पहुँचते ही यात्रा की थकान काफूर हो गई। शिव पिता की अनुभूति पाते ही अतिशय स्फूर्ति स्पन्दित हो उठी। हमारे उत्साह की वृद्धि का पारावार नहीं था। सबकुछ पा लेने का सन्तोष, हमारे आल्हादित चेहरे से परिलक्षित हो रहा था। ऐसे लग रहा था जैसे सम्पूर्ण सृष्टि के सर्व खजानों के बादशाह हम हैं क्योंकि बाप के घर कुछ नहीं करना था, बस मौज ही मौज मनानी थी।

'वो मेरा बाबा है'

यह प्राप्ति यहीं नहीं रुकी, अव्यक्त बापदादा से मिलन के दिन एक गीत के दो शब्द ही कानों में पड़े कि जीवन की तपस्या सफलीभूत हो गई। 'वो मेरा बाबा है' सुना और लगा जैसे मुझे पंख लग गये हैं। मैं निश्चित तौर पर बापदादा के पास था। पिछले 9 वर्षों से योग की अवस्था निरन्तर नहीं बना पा रहा था। चाहना रखता था, अनुभव करना चाहता था लेकिन माया योग में बैठते ही, नाक-कान मरोड़ कर व्यर्थ के चिन्तन में पहुँचा देती थी। इस गीत से मानो संजीवनी मिली। बापदादा के मिलन का प्रत्यक्ष फल देखिए, अतीन्द्रिय सुख की अनुभूति सहज ही हो गई। आनन्द के सागर, प्रेम के सागर के संग का रंग सहज चढ़ गया।

बाबा की पालना पाकर, भाई-बहनों के संग का रंग लेकर, खजानों को समेटे हुए वापसी की यात्रा शुरू हुई। मधुबन (शान्तिवन) ने हमसे हमारा सम्पूर्ण बोझ छीन लिया और हमें पूरे हल्केपन के साथ विदा किया। अब तो आलम यह है कि जब कभी भी व्यर्थ संकल्प जीवन डगर को व्यथित करते हैं तो गीत के वे बोल मानस पटल पर उभर कर बाबा की याद और मदद का अहसास कराते रहते हैं। बाबा का लाख-लाख शुक्रिया। ●●●

सदस्यता शुल्क:

(भारत) वार्षिक: 100 /- आजीवन : 2,000 /-
(विदेश) वार्षिक - 1,000/- आजीवन - 10,000/-

शुल्क ड्राफ्ट या ई-मनीऑर्डर द्वारा भेजने हेतु पता :

'ज्ञानामृत', ज्ञानामृत भवन, शान्तिवन- 307510
(आबू रोड) राजस्थान, भारत।

For Online Subscription: **Bank**: State Bank of India, **A/c Holder Name :** Gyanamrit, **A/c No:** 30297656367
Branch Name : PBKIVV, Shantivan, IFSC Code: SBIN0010638

अधिक जानकारी के लिए सम्पर्क सूत्र :
Mobile: 09414006904, 09414423949, **Email:** hindigyanamrit@gmail.com, omshantipress@bkivv.org

ब्र.कु. आत्मप्रकाश, मुख्य सम्पादक एवं प्रकाशक, ज्ञानामृत भवन, शान्तिवन, आबूरोड द्वारा सम्पादन तथा ओमशान्ति प्रिन्टिंग प्रेस, शान्तिवन-307510, आबूरोड में प्रजापिता ब्रह्माकुमारी ईश्वरीय विश्व विद्यालय के लिए छपवाया।
मुख्य सम्पादक - ब्र.कु. आत्मप्रकाश, **सम्पादक** - ब्र.कु. उर्मिला, शान्तिवन

फोटो, लेख, कविता या अन्य प्रकाशन सामग्री के लिये :
E-mail : gyanamritpatrika@bkivv.org, omshantiprintingpress@gmail.com, Website: gyanamrit.bkinfo.in

1.छिंदवाड़ा- शिक्षक स्नेह मिलन कार्यक्रम का उद्घाटन करते हुए छत्तीसगढ़ की महामहिम राज्यपाल सुश्री बहन अनुसूईया ऊईके। साथ में हैं एडवोकेट भ्राता दौलत सिंह ठाकुर, ब्र.कु.गणेशी बहन, ब्र.कु.मंगला बहन तथा ब्र.कु.विमला बहन। **2.भरतपुर-** 'म्हारो राजस्थान, समृद्ध राजस्थान' कार्यक्रम का उद्घाटन करते हुए महाराजा विश्वेन्द्र सिंह जी, राजस्थान के कैबिनेट मंत्री, पर्यटन एवं देवस्थान विभाग; भ्राता हैदर अली जैदी, पुलिस अधीक्षक; भ्राता उदयभान सिंह जी, डीन, कृषि महाविद्यालय; ब्र.कु.कविता बहन, ब्र.कु.भावना बहन, ब्र.कु.बबीता बहन तथा ब्र.कु.पुरुषोत्तम भाई। **3.हैदराबाद (शान्ति सरोवर)-** तेलंगाना की राज्यपाल महामहिम बहन टी.सुन्दरराजन का अभिनन्दन करते हुए ब्र.कु.शीला बहन। **4.लंदन-** महात्मा गांधी जी की 150वीं जयंती पर ब्रिटिश पार्लियामेन्ट में भोपाल सेवाकेन्द्र की ब्र.कु.डॉ.रानी बहन को प्रथम भारतीय ऊर्जावान महिला के पुरस्कार से सम्मानित करते हुए लार्ड रमिन्द्र सिंह रेंजर। **5.कैलिफोर्निया-सैकरोमेन्टो-** कैलिफोर्निया स्टेट असेम्बली सदस्य के. कूले के फील्ड प्रतिनिधि भ्राता एम.उम्बाशी, ब्र.कु.वेदान्ती बहन को शान्ति-प्रचार के कार्यों के लिए सम्मानित करते हुए। **6.जयपुर (राजापार्क)-** 'चुनौतीपूर्ण परिस्थितियों का प्रबंधन' कार्यक्रम का उद्घाटन करने के बाद राजस्थान विश्वविद्यालय के पूर्व अध्यक्ष भ्राता विनोद जाखड़ जी, बॉलीवुड प्लेबैक सिंगर भ्राता मामे खान जी, ब्र.कु.पूनम बहन, राजस्थान के खाद्य मंत्री भ्राता रमेश चंद मीणा, बॉलीवुड सिंगर भ्राता रहमान अली खान जी, ब्र.कु.स्नेह बहन तथा ब्र.कु.पूजा बहन। **7.राउरकेला-** केन्द्रीय स्टील तथा पेट्रोलियम मंत्री भ्राता धर्मेन्द्र प्रधान को ईश्वरीय सौगात देते हुए ब्र.कु.बिमला बहन। साथ में हैं विधायक भ्राता शंकर ओराम, ब्र.कु.अंजली बहन तथा अन्य। **8.मुम्बई (सान्ताकुज)-** महाराष्ट्र के स्कूल शिक्षा, खेल तथा युवा कल्याण मन्त्री भ्राता आशीष शेलर को ईश्वरीय सन्देश देते हुए ब्र.कु.मीरा बहन। **9.लंदन-** महात्मा गांधी जी की 150वीं जयंती पर ब्रिटिश पार्लियामेन्ट में नागठाणे सेवाकेन्द्र की ब्र.कु.सुवर्णा बहन तथा ब्र.कु.दीपक हरके को 'एक्सीलेन्स अवार्ड' से सम्मानित करते हुए बहन अमृता देवेन्द्र फडवणीस, लार्ड पारेख तथा लार्ड रामी रेंजर। **10.कूच बिहार-** गुंजाबारी सेवाकेन्द्र में राजयोग अनुभूति कार्यक्रम में मंच पर उपस्थित हैं ब्र.कु.शीला बहन, ब्र.कु.रमेश भाई, पश्चिम बंगाल के विकास मंत्री भ्राता रविन्द्र नाथ घोष, एयरपोर्ट निदेशक भ्राता विप्लव मंडल, ब्र.कु.सम्पा बहन तथा अन्य।

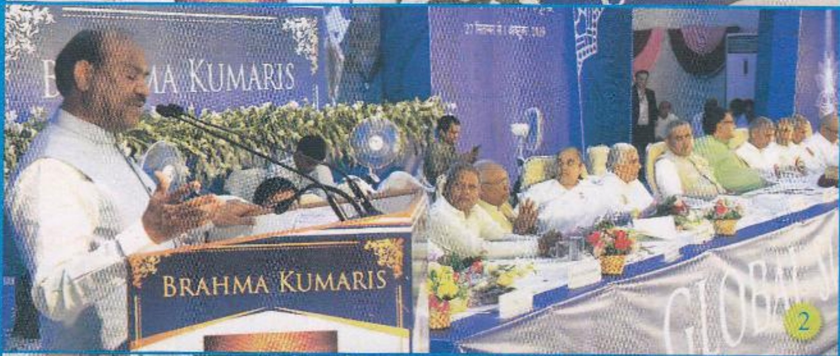

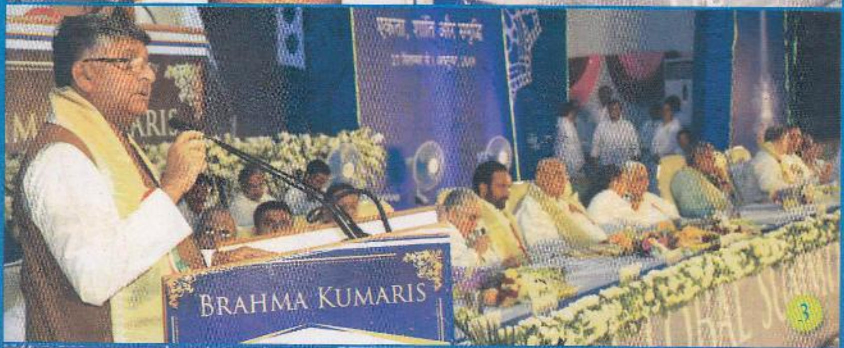

RNI No.10563/1965,
Postal Regd.
No.RJ/SRO/9559/2018-2020
Posting at Shantivan-307510
(Abu Road)
Licensed to post without
prepayment No.
RJ/WR/WPP/002/2018-2020.
Published on 20th of each
Month &
Posted on 26th to 1st of each month.
Price 1 copy Rs. 8.50,
Issue : November, 2019.

1. शान्तिवन (आबू रोड)- वैश्विक शिखर सम्मेलन में सभा को सम्बोधित करते हुए भारत के उप-राष्ट्रपति महामहिम भ्राता एम.वेंकैया नायडू। मंचासीन हैं राजस्थान के राज्यपाल महामहिम भ्राता कलराज मिश्र, राजयोगिनी दादी जानकी जी, राजयोगिनी दादी रत्नमोहिनी जी, ब्र.कु.निर्वैर भाई तथा अन्य।

2. शान्तिवन (आबू रोड)- वैश्विक शिखर सम्मेलन में सभा को सम्बोधित करते हुए लोकसभा अध्यक्ष भ्राता ओम बिरला। मंचासीन हैं राजयोगिनी दादी जानकी जी, ब्र.कु.करुणा भाई, सांसद देवजी भाई पटेल तथा अन्य।

3. शान्तिवन (आबू रोड)- वैश्विक शिखर सम्मेलन में सभा को सम्बोधित करते हुए केन्द्रीय कानून मन्त्री भ्राता रविशंकर प्रसाद। मंचासीन हैं राजयोगिनी दादी जानकी जी, ब्र.कु.बृजमोहन भाई, ब्र.कु.सन्तोष बहन तथा अन्य।

4. शान्तिवन (आबू रोड)- वैश्विक शिखर सम्मेलन में सभा को सम्बोधित करते हुए केन्द्रीय पशुधन विकास, लघु-मध्यम उद्योग राज्यमन्त्री भ्राता प्रतापचन्द्र सारंगी। मंचासीन हैं ब्र.कु.शुक्ला बहन, सामाजिक कार्यकर्त्ता बहन अरुणा राय, पद्मश्री डॉ.रानी बंग, विधायक भ्राता नागेन्द्र सिंह राठौर तथा अन्य।

5. शान्तिवन (आबू रोड)- वैश्विक शिखर सम्मेलन में सभा को सम्बोधित करते हुए केन्द्रीय इस्पात राज्यमंत्री भ्राता फग्गन सिंह कुलस्ते। मंचासीन हैं राजयोगिनी दादी जानकी जी, राजयोगिनी दादी रत्नमोहिनी जी, पद्मश्री डॉ.भक्तवत्सलम तथा अन्य।